भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

वर्ष 17, अंक 31, अप्रैल 2025-सितंबर 2025

ई-पत्रिका अंक 11

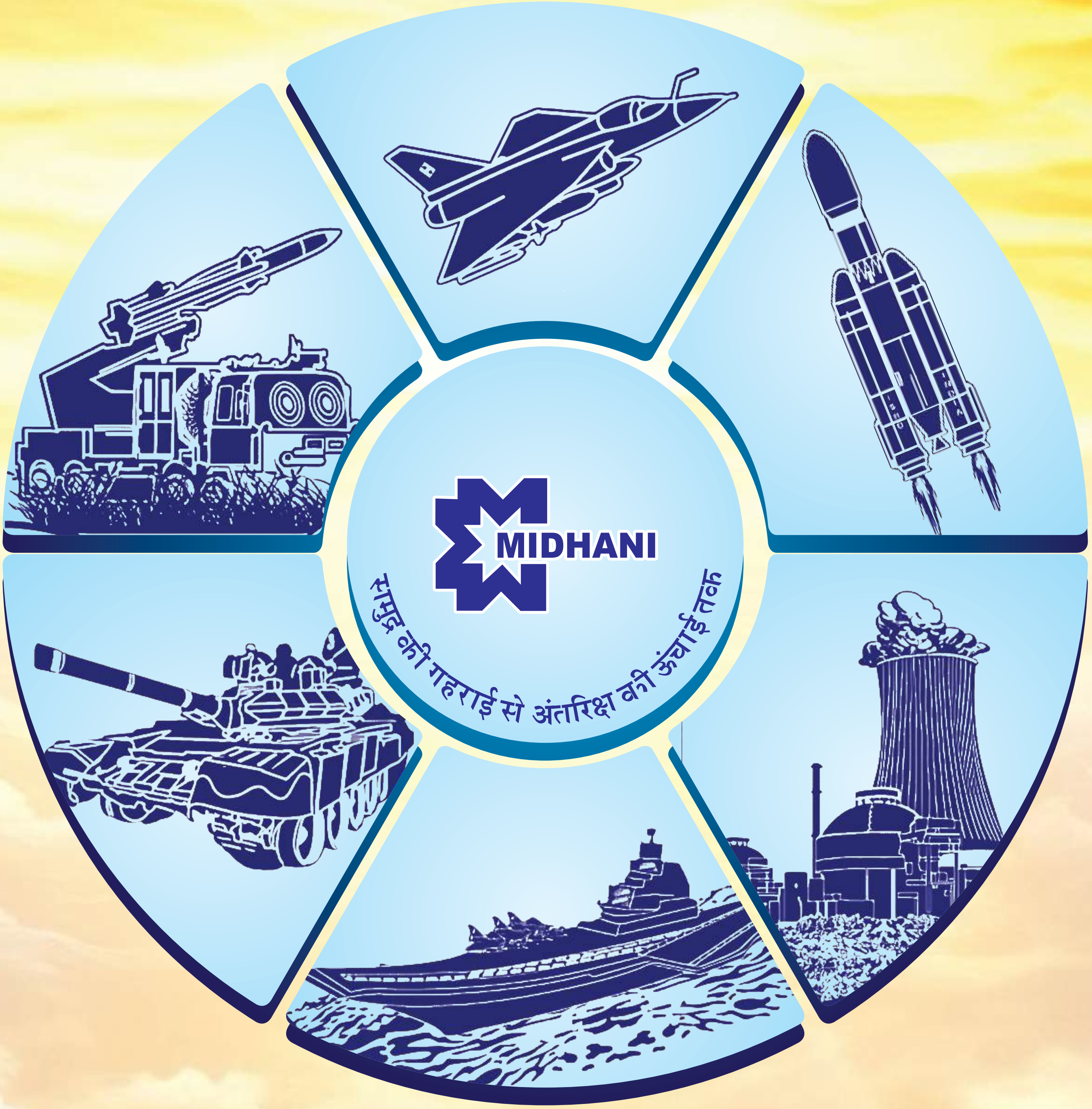

रक्षा सशक्तिकरण : सुरक्षित भविष्य का निर्माण

रक्षा राज्य मंत्री के दौरे की झलकियाँ:

माननीय रक्षा राज्य मंत्री का मिधानि दौरा

माननीय रक्षा राज्य मंत्री **श्री संजय सेठ** मिधानि के **बी एंड डब्ल्यू डी शॉप** की अत्याधुनिक सुविधाओं का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. ए.वी.एस. नारायण मूर्ति, सीएमडी मिधानि, कमोडोर ए. माधव राव, सीएमडी, बीडीएल, श्रीमती के. मधुबाला, निदेशक (वित्त) तथा श्री पी. बाबू, निदेशक (उ) एवं अन्य उपस्थित थे। के अवसर पर स्वागत करने का सौभाग्य मिधानि को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने आकाश, ब्रह्मोस, गगनयान, चंद्रयान तथा सुखोई जैसे भारत के प्रतिष्ठित रक्षा एवं अंतरिक्ष अभियानों में मिधानि के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की।

मिधानि की सी एम सी के साथ रक्षा राज्य मंत्री

सी एम डी मिधानि के साथ चर्चा करते हुए

स्मृति चिह्न स्वीकार करते हुए

MIDHANI

संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

इस अंक में

- संदेश... 02
- संपादकीय... 09
- राजभाषा... 10
- कविता...
  - माही ... एक गुड़िया प्यारी 21
- आलेख...
  - हिंदी: राष्ट्र की पहचान और विकास की भाषा 20
  - भारतीय अस्मिता का प्रतीक और एकता का सूत्र... 22
  - गुलामी की मानसिकता दूर करने में भाषा की भूमिका... 23
  - हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका... 25
  - समय प्रबंधन : सफलता की कुंजी... 27
  - सिनेमा की रोशनी में हिंदी: भाषा, संस्कृति और जनचेतना का विस्तार... 29
- नाटक...
  - मुझे नौकरी की जरूरत है 31
- कहानी...
  - रिजेक्ट नहीं होना है 35
- गतिविधियाँ... 37
- आओ, हिंदी से तेलुगु और तेलुगु से हिंदी सीखें...43
- सुविचार... 44

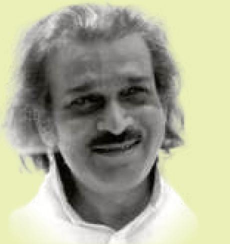

दुख तुम्हें क्या तोड़ेगा,
तुम दुख को तोड़ दो।
बस अपनी आँखें
औरों के सपनों से जोड़ दो।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
(15 सितंबर 1927 - 23 सितंबर 1983)

संपादक मंडल

प्रधान संरक्षक
डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

के. मधुबाला
निदेशक (वित्त)

पी. बाबू
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

हरि कृष्ण वी.
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मानव संसाधन)

संपादन व डिजाइनिंग
डॉ बी बालाजी
प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार
तथा सदस्य-सचिव,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादन सहयोग
श्रीमती डी.वी. रत्न कुमारी
कनिष्ठ कार्यपालक (हिंदी अनुभाग)

श्री वासुदेव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

डॉ. विकास आजाद
सहायक (हिंदी अनुवादक)

संपादक संकल्प
मिश्र धातु निगम लिमिटेड,
कंचनबाग, हैदराबाद-500058
ई-मेल : b.balaji@midhani-india.in
टेलीफोन : 040-24184325, 4298
(मो) 8500920391

पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

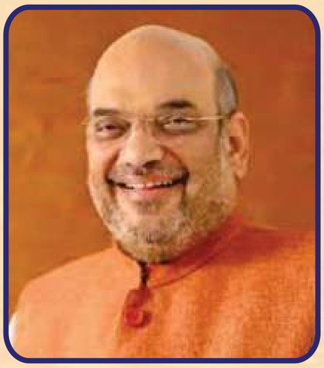

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

हिंदी दिवस उस सांस्कृतिक शक्ति को नमन करने का अवसर है जिसने हमारे विविध और विशाल राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध रखा है। इस पावन अवसर पर मैं देशवासियों को शुभकामनाएं देता हूँ।

आज आज़ादी के अमृतकाल में भारत नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। रक्षा, विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और संस्कृति- हर क्षेत्र में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। यह न केवल प्रशासन में पारदर्शिता लाता है, बल्कि आम नागरिक की भागीदारी और हमारे लोकतंत्र की जड़ों को भी सुदृढ़ करता है। हाल ही में "ऑपरेशन सिंदूर" में हमारी तीनों सेनाओं ने वीरता और समन्वय का अद्वितीय परिचय दिया। इस सफलता में जहां हमारी सेना ने अपने अदम्य साहस और कुशल तकनीकी का प्रदर्शन कर पूरे देश को राष्ट्र भावना तथा एकता के सूत्र में पिरोया, उसी प्रकार राजभाषा हिंदी ने भी संवाद और सहयोग को सरल बनाकर पूरे तंत्र को एक सूत्र में बांधा।

इस हिंदी दिवस के अवसर पर, आइए हम सभी यह संकल्प लें कि हिंदी और भारतीय भाषाओं को केवल संवाद की भाषा ही नहीं, बल्कि विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान और प्रशासन की भी शक्ति बनाएंगे। हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की धुरी है और इसी से हम सशक्त और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे।

"जय हिंद"

(राजनाथ सिंह)

नई दिल्ली
02 सितम्बर, 2025

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-110011
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

आप सभी को संकल्प का यह अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मिधानि का अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक होने के नाते ही नहीं, बल्कि पत्रिका संकल्प से मेरा परोक्ष संबंध भी लंबे समय से रहा है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि पिछली छमाही में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) [नराकास (उ)] द्वारा संकल्प को **सर्वश्रेष्ठ ई-पत्रिका** श्रेणी में सम्मानित किया गया। आने वाले समय में भी इसे और अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिए हमारे प्रयास निरंतर जारी रहेंगे।

राजभाषा का कार्यान्वयन मिधानि का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। इसी दायित्व के निर्वहन के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार के माध्यम से मिधानि देश के विकास एवं प्रगति में अपना योगदान दे रहा है। भाषा समाज का एक सशक्त समन्वय सूत्र है, जिसके माध्यम से समाज संगठित एवं समन्वित रहता है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति समाज का एक सजीव सदस्य बनता है। सामाजिक दृष्टि से भाषा द्वारा ही सर्वाधिक व्यवहार एवं भाव - संप्रेषण संभव होता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति भाषा के माध्यम से अपने भावों एवं विचारों का आदान - प्रदान करता है। यही सामाजिक संप्रेषण की प्रक्रिया व्यक्ति और समाज को जोड़ते हुए राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ करती है।

'संकल्प' मिधानि के कर्मचारियों एवं हितधारकों के साथ जुड़ने का एक सहज और प्रभावी माध्यम है। इसे और अधिक ज्ञानवर्धक, सूचनाप्रद तथा पठनीय बनाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि विभिन्न विभागों में कार्यरत हमारे कर्मचारीगण इस पत्रिका में निरंतर अपना सक्रिय योगदान देते रहें और आपस में सार्थक संवाद स्थापित करते रहें।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि उत्पादन के लक्ष्यों के साथ - साथ संस्थान के राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु कंधे से कंधा मिलाकर निरंतर आगे बढ़ें।

धन्यवाद।

नारायण मूर्ति

डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति
(अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक)

निदेशक (वित्त) का संदेश

प्रिय साथियो,

आप सभी भला-भाँति जानते हैं कि हिंदी हमारी राजभाषा है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधती है। भारत सरकार के सभी कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार, प्रेषण एवं प्रोत्साहन पर विशेष बल दिया जाता है। भाषा समाज को जोड़ने का कार्य करती है; इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए राजभाषा से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके साथ ही यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि हम वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ अपने दैनिक सरकारी कार्यों में सरल एवं सहज हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें, ताकि राजभाषा हिंदी के प्रसार को और गति मिल सके।

मिधानि की राजभाषा गृह-पत्रिका 'संकल्प' का 31वाँ अंक मिधानि के राजभाषा कार्यान्वयन का प्रतिनिधित्व करता है। आज यह पत्रिका उन सभी के लिए एक सशक्त माध्यम बन गई है, जो अपने विचारों और भावनाओं को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करना चाहते हैं। इस अंक में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विषयों के साथ-साथ लेख, कविताएँ, नाटक आदि अनेक साहित्यिक विधाओं को समाहित किया गया है, जो इसे और अधिक समृद्ध बनाते हैं।

संकल्प के इस नवीन अंक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ तथा पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन और कंपनी के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करती हूँ।

जय हिंद ! जय हिंदी !

के. मधुबाला

के. मधुबाला
निदेशक (वित्त)

निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) का संदेश

प्रिय साथियो,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 14 सितंबर 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। हीरक जयंती के रूप में मनाया जा रहा यह वर्ष विशेष महत्व रखता है। यह अवसर हमें हमारी राजभाषा हिंदी के महत्व तथा उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का निरंतर स्मरण कराता है।

हिंदी केवल संवाद का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच, पहचान और संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति भी है। साथियों, वर्तमान समय वह है जब हिंदी के तीव्र विकास को हम स्पष्ट रूप से अनुभव कर सकते हैं। आज हिंदीतर भाषियों के बीच भी हिंदी की स्वीकार्यता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस तथ्य को संकल्प के 31वें अंक के माध्यम से सहज रूप से महसूस किया जा सकता है।

मिधानि के रचनाकारों द्वारा राजभाषा हिंदी में प्रस्तुत ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक कृतियों से समृद्ध गृह-पत्रिका संकल्प का 31वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह एक जीवंत अंक है, जिसमें हम अपने विचारों और भावों को लेख, कविताओं तथा अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहे हैं।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रत्येक कर्मी का एकजुट और सक्रिय योगदान सुनिश्चित हो। जिस प्रकार हम कंपनी के उत्पादन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर कार्य करते हैं, उसी प्रकार राजभाषा से संबंधित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भी हमें सामूहिक प्रयास करने चाहिए।

अंतिम पंक्तिय, मैं संकल्प पत्रिका के निरंतर विकास एवं उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक कामना करता हूँ।

धन्यवाद।

पी. बाबू
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मानव संसाधन) का संदेश

प्रिय कर्मचारीगण,

यह अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि गृह-पत्रिका '**संकल्प**' का 31वाँ अंक प्रकाशन की ओर अग्रसर है। यह पत्रिका केवल एक आंतरिक प्रकाशन नहीं, बल्कि मिधानि में **राजभाषा हिंदी के संवर्धन, प्रचार-प्रसार और सशक्त कार्यान्वयन** का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। उल्लेखनीय है कि इस पत्रिका में राजभाषा से संबंधित गतिविधियों, रचनात्मक लेखन, साहित्यिक योगदान तथा संस्थान में हो रहे हिंदी प्रयोग की समग्र जानकारी को अत्यंत सुंदर एवं सारगर्भित रूप में संकलित किया जाता है। यही कारण है कि 'संकल्प' पाठकों के मन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, सम्मान और अपनत्व की भावना जागृत करने में सफल हो रही है।

यह पत्रिका न केवल कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच है, बल्कि उन्हें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित भी करती है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपने कार्यालयीन एवं प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाएँ, ताकि मिधानि में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों को न केवल समयबद्ध रूप से प्राप्त किया जा सके, बल्कि इस क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर हम एक **प्रेरणादायी और आदर्श संस्थान** के रूप में भी स्थापित हो सकें।

यह संतोष का विषय है कि संस्थान का प्रत्येक कर्मचारी राजभाषा के प्रति स्वप्रेरणा से कार्य कर रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से लेकर विभिन्न हिंदी गतिविधियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत सराहनीय है। यही सामूहिक प्रयास 'संकल्प' को निरंतर नई ऊँचाइयों तक ले जा रहा है।

अंत में, मैं गृह–पत्रिका 'संकल्प' के निरंतर उन्नयन और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा इसके सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल एवं सहयोग देने वाले सभी कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

हरिकृष्णा वी.
अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, मानव संसाधन)

संपादकीय

संकल्प : भाषा, सहभागिता और संगठनात्मक एकता का प्रतीक

राजभाषा हिंदी केवल प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और संगठनात्मक संवाद का सशक्त माध्यम है। मिधानि की गृह-पत्रिका 'संकल्प' इसी भावना को आत्मसात करते हुए कर्मचारियों, अधिकारियों और हितधारकों को एक साझा मंच प्रदान करती रही है। संकल्प का यह नवीन अंक न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का दर्पण है, बल्कि मिधानि में राजभाषा हिंदी के सशक्त, समावेशी और सतत कार्यान्वयन की जीवंत तस्वीर भी प्रस्तुत करता है।

निदेशक मंडल के संदेश इस तथ्य को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन मिधानि की प्राथमिकताओं में सदैव अग्रणी रहा है। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का यह संदेश प्रेरक है कि 'संकल्प' कर्मचारियों और हितधारकों को जोड़ने का एक सहज माध्यम बन चुका है और उत्पादन लक्ष्यों के साथ-साथ राजभाषा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। निदेशक (वित्त) द्वारा सरल, सहज और व्यवहारिक हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर दिया गया बल यह दर्शाता है कि भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह दैनिक कार्य-प्रवाह का स्वाभाविक हिस्सा हो। वहीं निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) का संदेश यह स्मरण कराता है कि हिंदी की हीरक जयंती केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा भी है-जहाँ हिंदी तकनीक, प्रबंधन और नवाचार की भाषा बन रही है।

हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर मिधानि में आयोजित हिंदी माह की गतिविधियाँ इस दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हुईं। विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न प्रतियोगिताओं-जैसे निबंध, वाक्, टंकण, प्रश्नोत्तरी, गायन आदि-में हिंदी भाषियों के साथ-साथ अन्य भाषाभाषी कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली। यह सहभागिता इस बात का प्रमाण है कि हिंदी किसी एक भाषा-समुदाय तक सीमित नहीं, बल्कि वह संपर्क, सहयोग और सामंजस्य की भाषा बन रही है। दक्षिण भारत जैसे बहुभाषी परिवेश में यह उपलब्धि विशेष महत्व रखती है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को और अधिक व्यापक एवं निरंतर बनाने के उद्देश्य से मिधानि में हिंदी की मासिक प्रतियोगिताओं का शुभारंभ एक सराहनीय पहल है। इससे कर्मचारियों को नियमित रूप से हिंदी में कार्य करने, लिखने और सोचने का अवसर मिलेगा तथा राजभाषा के प्रति आत्मीयता और स्वाभाविकता विकसित होगी। यह पहल राजभाषा को 'कार्यक्रम' से आगे बढ़ाकर 'कार्य-संस्कृति' का हिस्सा बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

संकल्प पत्रिका इन सभी प्रयासों का प्रतिबिंब है-जहाँ प्रशासनिक दायित्व, रचनात्मकता और सहभागिता एक साथ दिखाई देती हैं। यह पत्रिका हमें यह स्मरण कराती है कि भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों की ऊर्जा और संगठन की आत्मा होती है। आइए, हम सभी संकल्प लें कि जैसे हम तकनीकी उत्कृष्टता और उत्पादन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं, वैसे ही राजभाषा हिंदी के सशक्त कार्यान्वयन के लिए भी निरंतर सक्रिय सहभागिता निभाएँ। यही सहभागिता 'संकल्प' को और अधिक समृद्ध बनाएगी और मिधानि को राजभाषा के क्षेत्र में एक प्रेरणादायी संस्थान के रूप में स्थापित करेगी।

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

मिधानि में हिंदी माह 2025 का समापन

संविधान में राजभाषा हिंदी के प्रस्ताव और दक्षिण भारत के योगदान पर सारगर्भित व्याख्यान

हैदराबाद स्थित भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधीन उपक्रम **मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि)** में हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में आयोजित **हिंदी माह** का समापन 19 नवंबर 2025 को गरिमामय समारोह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर '**संविधान में राजभाषा का प्रस्ताव और दक्षिण भारतियों का योगदान**' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में **डॉ. गोपाल शर्मा**, प्रोफेसर (भाषा विज्ञान), अरबा मिंच विश्व विद्यालय, इथियोपिया (अफ्रीका) ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

समारोह की अध्यक्षता मिधानि के **अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति** ने की। कार्यक्रम में **निदेशक (वित्त) श्रीमती के. मधुबाला** तथा **निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री पी. बाबू** की गरिमामयी उपस्थिति भी रही। मिधानि के अधिकारीगण, कर्मचारी तथा बीपीडीएवी विद्यालय के छात्र-छात्राएँ इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

अध्यक्षीय संबोधन : हिंदी-संवाद से आगे, एक सांस्कृतिक सेतु

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति ने सभी उपस्थित कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि **भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय अस्मिता और एकता का सशक्त प्रतीक** है। उन्होंने 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह निर्णय भाषाई समरसता और राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित था।

डॉ. नारायण मूर्ति ने यह भी उल्लेख किया कि आज हिंदी वैश्विक स्तर पर प्रमुख भाषाओं में सम्मिलित हो चुकी है और **डिजिटल युग** ने इसकी पहुँच को और अधिक व्यापक बनाया है। विज्ञान

और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के उपयोग पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि जब वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी मातृभाषा में उपलब्ध होती है, तो समाज का बड़ा वर्ग उससे लाभान्वित होता है।

उन्होंने तकनीकी संगठन होने तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित होने की चुनौतियों के बावजूद मिधानि में **राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन** को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं और प्रोत्साहन योजनाओं की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से हिंदी के प्रति आत्मीयता और सहभागिता बढ़ी है। अंत में उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि प्रशासनिक, तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक गति दी जाएगी, ताकि हिंदी केवल परंपरा की भाषा न रहकर **भविष्य की प्रगति की आधारशिला** बने। उन्होंने हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी।

मुख्य व्याख्यान : दक्षिण भारत और राजभाषा नीति का ऐतिहासिक योगदान

मुख्य अतिथि एवं वक्ता **डॉ. गोपाल शर्मा** ने अपने व्याख्यान में कहा कि हिंदी को राजभाषा बनाने का निर्णय केवल प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि **राष्ट्रीय एकता, भाषाई संतुलन और संवैधानिक दूरदर्शिता** का परिणाम था।

उन्होंने संविधान के प्रारूप निर्माण में दक्षिण भारतीय विद्वान **बोगल नरसिम्हा राव** के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि संविधान निर्माण की प्रक्रिया में दक्षिण भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

डॉ. शर्मा ने **मोटूरि सत्यानारायण** की विशेष भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि वे संविधान की भाषा समिति के प्रथम अध्यक्ष थे और उन्होंने हिंदी के पक्ष में सशक्त एवं संतुलित तर्क प्रस्तुत किए। उनके प्रयासों से हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच एक व्यावहारिक एवं संतुलित नीति का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके अतिरिक्त **एन. गोपालस्वामी आयंगर, टी. ए. रामलिंगम चेट्टियार तथा टी. टी. कृष्णमाचारी** जैसे दक्षिण भारतीय विद्वानों ने भी हिंदी के समर्थन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने **दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा** के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि इस संस्था ने दक्षिण भारत में हिंदी शिक्षा और प्रचार-प्रसार के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित किया। अपने व्याख्यान के अंत में डॉ. शर्मा ने कहा कि राजभाषा नीति की सफलता में दक्षिण भारत के विद्वानों और संस्थाओं का

योगदान दूरदर्शी और अविस्मरणीय है, जिसे स्मरण करना हमारी **संवैधानिक और भाषाई एकता के प्रति सम्मान** व्यक्त करना है।

हिंदी माह 2025 : पुरस्कार वितरण और सहभागिता

समारोह के दौरान **निदेशक (वित्त) के. मधुबाला** तथा **निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) पी. बाबू** के करकमलों से 18 सितंबर से 18 अक्टूबर 2025 तक आयोजित **हिंदी माह** के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें हिंदी टंकण, वाक् प्रतियोगिता, शब्दावली, टिप्पण-टिप्पण, निबंध लेखन, अविस्मरणीय स्मृतियों के झरोखे से, एक भारत- श्रेष्ठ भारत, गायन तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। दोनों निदेशकों ने विजेताओं को शुभकामनाएँ देते हुए भविष्य में भी हिंदी के प्रयोग और रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम और अन्य गतिविधियाँ

कार्यक्रम के दौरान माननीय **गृह मंत्री** एवं **रक्षा मंत्री** के संदेशों का वाचन क्रमशः **शुभदीप घोष**, अपर महाप्रबंधक (प्रभारी, क्रय) तथा **निशांक कुमार जैन**, अपर महाप्रबंधक (टाइटेनियम, आईसीपी एवं ईबीएम) द्वारा किया गया।

इस अवसर पर **डॉ. जी. आर. प्रवीण ज्योति**, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी; **गरिमा ओझा**, सहायक प्रबंधक (वित्त); तथा **उमेंद्र सिंह**, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (वाइड प्लेट मिल) ने मिधानि में आयोजित हिंदी दिवस, हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा हिंदी अनुभाग की कार्यशैली पर अपने विचार व्यक्त किए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत मिधानि के कर्मचारियों **साईबाबा, गौतमी पी. वर्षा, के. सुरेखा, नागराजू** और **विजयनाथ कुशवाह** ने मधुर हिंदी गीत प्रस्तुत किए। वहीं **डॉ. बी. बालाजी** ने हास्य–व्यंग्य कविता पाठ कर श्रोताओं को आनंदित किया।

समारोह का शुभारंभ बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों द्वारा हिंदी भाषा पर आधारित गीत से हुआ और कार्यक्रम का समापन **राष्ट्रगान** के साथ किया गया। पूरे कार्यक्रम का कुशल संचालन **डॉ. बी. बालाजी**, प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) ने किया। आयोजन को सफल बनाने में हिंदी अनुभाग के **रत्नकुमारी**, कनिष्ठ कार्यापलक तथा **विकास आज़ाद**, हिंदी अनुवादक की सक्रिय भूमिका सराहनीय रही।

यह समापन समारोह न केवल हिंदी माह 2025 की गतिविधियों का सार प्रस्तुत करता है, बल्कि मिधानि में **राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता, सहभागिता और निरंतर प्रगति** का भी सशक्त उदाहरण है।

मिधानि में हिंदी कार्यशालाएँ:
राजभाषा सशक्तिकरण की सतत पहल

राजभाषा सशक्तिकरण की दिशा में मिधानि की पहल

राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाने तथा कर्मचारियों को दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सहज, सटीक एवं आत्मविश्वासपूर्ण प्रयोग के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) में वर्ष 2025 के दौरान हिंदी कार्यशालाओं की एक सुव्यवस्थित श्रृंखला आयोजित की गई। ये कार्यशालाएँ भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप तथा मिधानि की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में संपन्न हुईं।

कार्यशालाओं का उद्देश्य और अवधारणा

इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य राजभाषा नीति के प्रति जागरूकता बढ़ाना, कार्यालयीन हिंदी से संबंधित व्यवहारिक कठिनाइयों को दूर करना तथा प्रशासनिक और तकनीकी शब्दावली के प्रयोग में कर्मचारियों को दक्ष बनाना था। इनका लक्ष्य केवल प्रशिक्षण तक सीमित न रहकर हिंदी को कार्य-संस्कृति का स्वाभाविक हिस्सा बनाना भी रहा।

आयोजन की रूपरेखा एवं समय-सारिणी

वर्ष 2025 के दौरान अप्रैल से अगस्त माह के बीच विभिन्न तिथियों पर एक दिवसीय मासिक हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक कार्यशाला को बहु-सत्रीय ढाँचे में आयोजित किया गया, जिससे प्रतिभागियों को भाषा, प्रशासन, तकनीक और व्यक्तित्व विकास जैसे विविध विषयों पर समग्र मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

राजभाषा नीति एवं संवैधानिक प्रावधानों पर मार्गदर्शन

कार्यशालाओं के प्रारंभिक सत्रों में राजभाषा नीति, संविधान के संबंधित अनुच्छेदों, राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने यह स्पष्ट किया कि राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन किसी एक विभाग की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी की सामूहिक सहभागिता से ही संभव है।

कार्यालयीन हिंदी : व्यवहारिक प्रयोग और चुनौतियाँ

दैनिक कार्यालयीन कार्यों-जैसे पत्राचार, टिप्पण-लेखन, मसौदा, आदेश एवं अधिसूचना-में हिंदी के सरल, स्पष्ट और

मानक प्रयोग पर विशेष बल दिया गया। प्रतिभागियों को यह बताया गया कि सहज हिंदी न केवल कार्य की गुणवत्ता बढ़ाती है, बल्कि संप्रेषण को भी अधिक प्रभावी बनाती है।

प्रशासनिक शब्दावली एवं मानकीकरण

प्रशासनिक शब्दावली पर केंद्रित सत्रों में मानक शब्दों के सही प्रयोग का अभ्यास कराया गया। इससे कर्मचारियों में यह आत्मविश्वास विकसित हुआ कि वे हिंदी में कार्य करते समय भाषायी त्रुटियों के भय से मुक्त होकर कार्य कर सकते हैं।

तकनीक के साथ हिंदी : टंकण, यूनिकोड और डिजिटल उपकरण

तकनीकी सत्रों में कंप्यूटर पर हिंदी टंकण, यूनिकोड फॉन्ट, सरल टाइपिंग टूल्स तथा विभिन्न हिंदी सॉफ्टवेयर के प्रयोग पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। यह स्पष्ट किया गया कि आधुनिक तकनीक ने हिंदी को अधिक सुलभ और उपयोगकर्ता–मित्र बना दिया है।

आधुनिक तकनीक में हिंदी की बढ़ती भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद, मोबाइल एप्लिकेशन और वॉइस–आधारित टूल्स में हिंदी की बढ़ती उपस्थिति पर चर्चा करते हुए यह रेखांकित किया गया कि हिंदी अब केवल परंपरा की भाषा नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीकी परिवेश में भी समान रूप से सक्षम भाषा बन चुकी है।

अतिथि वक्ताओं के व्याख्यान एवं विषयवस्तु

हिंदी कार्यशालाओं की प्रभावशीलता को सुदृढ़ बनाने में अतिथि वक्ताओं के सारगर्भित व्याख्यानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. बी. बालाजी, प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) ने राजभाषा नीति, कार्यालयीन शब्दावली तथा कंप्यूटर पर हिंदी टंकण के व्यावहारिक पक्षों पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री रजनीश कुमार यादव, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), अमरावती, हैदराबाद ने 'राजभाषा कार्यान्वयन में कर्मचारियों के दायित्व' विषय पर व्याख्यान देते हुए द्विभाषी कार्यप्रणाली के महत्व को रेखांकित किया।

इसी क्रम में श्री मु. कमालुद्दीन, सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने प्रशासनिक शब्दावली और नेमी टिप्पणियों पर प्रकाश डाला। वहीं श्री ऋषिकेश दास, गीता संदेश प्रबंधक, इस्कॉन हैदराबाद ने 'एक बेहतर व्यक्तित्व' विषय पर प्रेरक व्याख्यान देते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण, नैतिक मूल्यों और आत्म-विकास के महत्व को सरल उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

भाषा और व्यक्तित्व विकास : कार्य-संस्कृति का संबंध

व्यक्तित्व विकास से जुड़े सत्रों में यह स्पष्ट किया गया कि भाषा और व्यवहार का गहरा संबंध है। सकारात्मक सोच, अनुशासन, उत्तरदायित्व और संवाद कौशल से न केवल व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि संगठनात्मक वातावरण भी सशक्त बनता है।

प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता और संवादात्मक सत्र

कार्यशालाओं की एक उल्लेखनीय विशेषता प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता रही। प्रश्नोत्तर सत्रों और

अभ्यासात्मक गतिविधियों ने प्रशिक्षण को संवादात्मक, रोचक और प्रभावी बनाया।

हिंदी अनुभाग की भूमिका एवं समन्वय

कार्यशालाओं के सफल आयोजन में मिधानि के हिंदी अनुभाग की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। अनुभागीय कर्मियों के समन्वित प्रयासों से सभी कार्यक्रम सुव्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण ढंग से संपन्न हुए।

कार्यशालाओं की उपलब्धियाँ और प्रभाव

इन कार्यशालाओं के परिणामस्वरूप कर्मचारियों में हिंदी के प्रति जागरूकता, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को लेकर उत्साहजनक परिवर्तन देखने को मिला।

भविष्य की दिशा : निरंतरता और विस्तार

हिंदी कार्यशालाओं की सफलता को देखते हुए भविष्य में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और अधिक व्यापक तथा नियमित रूप से आयोजित करने की योजना है, जिससे राजभाषा कार्यान्वयन को निरंतर गति मिल सके।

राजभाषा को कार्य-संस्कृति बनाने का संकल्प

समग्र रूप से मिधानि में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की यह श्रृंखला राजभाषा हिंदी को नीति से आगे बढ़ाकर व्यवहार और कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में एक सार्थक पहल सिद्ध हुई है। इन प्रयासों से मिधानि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक प्रेरणादायी संस्थान के रूप में निरंतर अग्रसर हो रहा है।

नगर राजभाषा कार्यानयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए मिधानि को सम्मानित किया गया

राजभाषा गृह पत्रिका को उत्तम ई-पत्रिका सम्मान

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्यन हेतु बड़े कार्यालयों की श्रेणी में राजभाषा ट्रॉफी

मिधानि की ओर से इन पुरस्कारों को गृहण करते हुए श्री अरूण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (विपणन) तथा डॉ. बी. बालाजी, प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)।

हिंदी दिवस 2025: पुरस्कार वितरण

विजेताओं को मख्य अतिथि डॉ. गोपाल शर्मा, श्रीमती मधुबाला, निदेशक (वित्त) तथा श्री पी बाबू, निदेशक (उ. एवं वि.), ने पुरस्कारों से सम्मानित किया

रत्नेश भट्ट
वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (भंडार)

पी वर्षा
कार्यपालक (ग्रेड-I) (वित्त एवं लेखा)

जी ऋषिकेष
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (क्रय)

संतोष हरि हरिवर्धन जी
डिप्लोमा अभियंता-I(मेल्ट I&IV)

के सुरेखा
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (विपणन)

विजयनाथ कुशवाहा
तकनीशियन - II, (मेल्ट I&IV)

सी. सुरेश रेड्डी
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (एएमटीएल)

आर साईबाबा
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक निदेशक (वित्त)

एस ए नागराजू
तकनीशियन-II, (ऊष्मा उपचार)

अमित सिंह
प्रबंधक (क्रय)

डॉ सौरभ दीक्षित
वरि.प्रबंधक, (एएमडी)

सरस्वती चंद्रा
वरि.सहायक (गुणवत्ता प्रबंधन)

हिंदी दिवस 2025 : पुरस्कार वितरण

राजकुमार साहू
मास्टर तकनीशियन सहायक (यूटीलिटीज)

एस गौतमी
वरि.सहायक कराओके पर गायन-I

शुभम कुमार
प्रबंधक (ऑटो रिपेयर शॉप)

उमेंद्र सिंह
वरि तकनीशियन सहायक (वाइड प्लेट मिल)

रति राम नायक डी
प्रबंधक (गुणवत्ता प्रबंधन)

सुनील यादव
कनिष्ठ तकनीशियन-II, (वाइड प्लेट मिल)

ईश्वर प्रसाद
प्रबंधक (वाइड प्लेट मिल)

गरीमा ओझा
सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

जी. वेणुबाबू
प्रबंधक (वाइड प्लेट मिल)

अमरजीत कुमार सिंह
सहायक प्रबंधक (संरक्षा)

देवांशु शर्मा
सहायक प्रबंधक (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)

आर सेशु पावनी
सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

शिवम कुमार
सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

एस शिवाजी, तकनीशियन सहायक (यूटीलिटीज)
संदीप पवार, तकनीशियन-I, (सीआरएस, आर एण्ड एम-मैके)
राजकुमार साहू , मास्टर तकनीशियन सहायक (यूटीलिटीज)

देवांशु शर्मा, सहायक प्रबंधक (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)
एंटनी क्रिस्टी होसे, कनिष्ठ तकनीशियन-II (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)
रोहित गुप्ता, सहायक प्रबंधक (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)

MIDHANI

हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित तथा मासिक हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

क्र.सं.	कर्मचारी संख्या	पुरस्कार विजेता का नाम	प्रतियोगिता व स्थान
1	4559	रत्नेश भट्ट वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (भंडार)	(प्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-I
2	5059	एस नितेश वरि.प्रबंधक (क्रय)	(अप्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-III
3	5109	अरिजीत बनर्जी वरि.प्रबंधक (सीएमडी कार्यालय)	(अन्य भाषी) वाक्-III
4	5159	पी वर्षा कार्यपालक (ग्रेड-I), (वित्त एवं लेखा)	(स्त्री) कराओके पर गायन-II
5	5165	जी ऋषिकेष कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (क्रय)	(अन्य भाषी) निबंध लेखन-II
6	5181	संतोष हरि हरिवर्धन जी डिप्लोमा अभियंता-I (मेल्ट I&IV)	प्रश्नमंच-I
7	5222	के सुरेखा कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (विपणन)	(स्त्री) कराओके पर गायन-III
8	5223	विजयनाथ कुशवाहा तकनीशियन - II (मेल्ट I&IV)	(पुरुष) कराओके पर गायन-II
9	5227	सी. सुरेश रेड्डी कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक (एएमटीएल)	(प्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-III
10	5244	मोहम्मद अमीरुद्दीन डिप्लोमा अभियंता-I (मेल्ट I&IV)	प्रश्नमंच-I
11	5265	आर साईबाबा कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक निदेशक (वित्त) सचिवालय	(पुरुष) कराओके पर गायन-I
12	5280	एस ए नागराजू तकनीशियन-II (ऊष्मा उपचार)	(पुरुष) कराओके पर गायन-III
13	5330	अमित सिंह प्रबंधक (क्रय)	(हिंदी) वाक्-III
14	5340	डॉ सौरभ दीक्षित वरि.प्रबंधक (एएमडी)	(हिंदी) अविस्मरणीय स्मृतियों-I
15	5391	सरस्वती चंद्रा वरि.सहायक (गुणवत्ता प्रबंधन)	(अप्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-I
16	5462	राजकुमार साहू मास्टर तकनीशियन सहायक (यूटीलिटीज)	(हिंदी) वाक्-II, अविस्मरणीय स्मृतियों-II, प्रश्नमंच-II
17	5476	डॉ प्रवीण ज्योति वरि.प्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ)	(अन्य भाषी) वाक्-I, अविस्मरणीय स्मृतियों-II, निबंध लेखन-III
18	4587	एस गौतमी वरि.सहायक	(स्त्री) कराओके पर गायन-I

क्र.सं.	कर्मचारी संख्या	पुरस्कार विजेता का नाम	प्रतियोगिता व स्थान
19	5495	शुभम कुमार प्रबंधक (ऑटो रिपेयर शॉप)	शब्दावली-III
20	5504	रति राम नायक डी प्रबंधक (गुणवत्ता प्रबंधन)	(अन्य भाषी) अविस्मरणीय स्मृतियों-III
21	5522	रामचन्द्र बेहरा उप प्रबंधक (ईएमएस)	(अन्य भाषी) वाक्-III
22	5624	संदीप पवार तकनीशियन-I (सीआरएस, आर एण्ड एम-मैके)	प्रश्नमंच-III
23	5637	सुनील यादव कनिष्ठ तकनीशियन-II (वाइड प्लेट मिल)	(अन्य भाषी) निबंध लेखन-I
24	5654	उमेंद्र सिंह वरि तकनीशियन सहायक (वाइड प्लेट मिल)	(अन्य भाषी) अविस्मरणीय स्मृतियों-I, वाक्-II
25	5680	एंटनी क्रिस्टी होसे कनिष्ठ तकनीशियन-II (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)	प्रश्नमंच-III
26	5690	ईश्वर प्रसाद प्रबंधक (वाइड प्लेट मिल)	(हिंदी) निबंध लेखन-II, शब्दावली-II
27	5693	गरीमा ओझा सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	(हिंदी) वाक्-I, शब्दावली-I
28	5694	जी. वेणुबाबू प्रबंधक (वाइड प्लेट मिल)	एक भारत - श्रेष्ठ भारत-I
29	5700	कुरुव आदिनारायण सहायक (गुणवत्ता प्रबंधन)	(प्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-II
30	5713	अमरजीत कुमार सिंह सहायक प्रबंधक (संरक्षा)	(हिंदी) निबंध लेखन-III
31	5730	गोबिंद चंद दाश सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन)	एक भारत - श्रेष्ठ भारत-I
32	5740	रोहित गुप्ता सहायक प्रबंधक (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)	प्रश्नमंच-III
33	5741	देवांशु शर्मा सहायक प्रबंधक (डाउनस्ट्रीम अनुरक्षण)	प्रश्नमंच-III
34	5764	आर सेशु पावनी सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	(अप्रशिक्षित) कंप्यूटर पर हिंदी शब्द संसाधन-II
35	5767	शिवम कुमार सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	(हिंदी) अविस्मरणीय स्मृतियों-III
36	5811	एस शिवाजी तकनीशियन सहायक (यूटीलिटीज)	प्रश्नमंच-II

सभी विजेताओं को पत्रिका संपादक मंडल की ओर से बहुत - बहुत शुभकामनाएँ.....

हिंदी : राष्ट्र की पहचान और विकास की भाषा

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, परंतु हिंदी वह धारा है जो इन सबको जोड़कर एक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करती है। हिंदी न केवल करोड़ों भारतीयों की मातृभाषा है, बल्कि यह संस्कृति, परंपरा और भारतीय अस्मिता का प्रतीक भी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, तो इसके पीछे उद्देश्य यही था कि यह भाषा पूरे राष्ट्र के प्रशासन और व्यवहार की धुरी बने। लेकिन यह यात्रा उतनी सरल नहीं रही जितनी सोची गई थी। आज, जब राजभाषा विभाग की स्थापना को 50 वर्ष और हिंदी को राजभाषा बनाए जाने को 75 वर्ष हो चुके हैं, तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हिंदी की वर्तमान स्थिति क्या है और इसके भविष्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए।

हिंदी और अंतरराष्ट्रीय पहचान

अक्सर यह महसूस किया जाता है कि जब तक हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान नहीं बना लेती, तब तक यह भारत में भी पूर्ण रूप से स्थापित नहीं होगी। अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव हमारे सामाजिक, शैक्षिक और प्रशासनिक जीवन में गहराई तक पैठ बना चुका है। ऐसे में हिंदी को विश्वभाषा बनाने का प्रयास भारत के आत्मविश्वास को बढ़ाएगा और देश के भीतर इसके प्रयोग को भी प्रोत्साहन देगा। यह वही स्थिति होगी जब राष्ट्र और भाषा दोनों का विकास समानांतर रूप से होगा - एक विकासशील राष्ट्र की विकासशील राजभाषा।

प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग

राजभाषा विभाग ने नीतिगत स्तर पर अनेक पहल की हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि मंत्रालयों और केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग अभी भी सीमित है। अधिकांश पत्राचार अंग्रेज़ी में ही होता है। यदि केंद्र सरकार के कर्मचारी ही यह अनुभव न कर पाएँ कि हिंदी उनके दैनिक कार्यों की भाषा है, तो आम जनता तक इसकी पहुँच कैसे संभव होगी ? राजभाषा केवल विभागीय मेल या पत्रों तक सीमित न रहे, बल्कि अन्य सभी संचार में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जाए। तभी यह भाषा प्रशासन की रीढ़ बन सकेगी।

निरीक्षण और पारदर्शिता

संसदीय राजभाषा समिति समय–समय पर विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण करती है, किंतु केवल अधीनस्थ कार्यालयों तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है। मंत्रालयों का भी परीक्षण होना चाहिए। यदि शीर्ष स्तर पर ही हिंदी की उपेक्षा होगी तो अधीनस्थ कार्यालयों में गंभीरता की अपेक्षा नहीं की जा सकती। निरीक्षण और मूल्यांकन से ही स्पष्ट होगा कि हिंदी किस गति से आगे बढ़ रही है और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

सम्मेलनों का प्रभाव और चुनौतियाँ

राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन निश्चय ही प्रेरणादायी होता है। इनसे कर्मचारियों और अधिकारियों में उत्साह का संचार होता है। लेकिन जब कार्यालयों का वातावरण ही हिंदी के प्रति उदासीन हो, तो यह उत्साह शीघ्र ही क्षीण हो जाता है। यह वैसा ही है जैसे किसी धावक को प्रोत्साहन तो मिले, किंतु उसकी दौड़ की राह में बाधाएँ बनी रहें। इस स्थिति में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते।

हिंदी विवाद और उसका समाधान

हिंदी को लेकर समय-समय पर विवाद खड़े होते रहे हैं। वास्तव में यह विवाद तर्कहीन हैं। हिंदी किसी क्षेत्र विशेष की नहीं, बल्कि पूरे भारत की भाषा है। यह जोड़ने का कार्य करती है, बाँटने का नहीं। यदि हिंदी भाषी लोग अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने और उनका प्रयोग करने की पहल करें, तो यह संदेश जाएगा कि हिंदी किसी भाषा को दबाने नहीं, बल्कि अपनाने और साथ लेकर चलने वाली भाषा है। इस दृष्टिकोण से भाषाई विरोध स्वत: समाप्त हो सकता है।

तकनीकी युग और हिंदी

आज का युग तकनीक और डिजिटल उपकरणों का है।

राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ई-टूल्स हिंदी के प्रचार-प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकते हैं। किंतु इन्हें केवल कार्यालयों तक सीमित न रखकर आम जनता के लिए भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए। यदि ये टूल्स गूगल की तरह सर्वसुलभ और लोकप्रिय हो जाएँ, तो लोगों के लिए हिंदी का प्रयोग सहज और आकर्षक बन जाएगा।

मातृभाषा का सम्मान

हिंदी भाषियों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अपनी मातृभाषा का सम्मान करें। जब तक हम स्वयं अपनी भाषा को हीन दृष्टि से देखते रहेंगे, तब तक अन्य लोग भी उसे महत्व नहीं देंगे। बच्चों को यह सिखाना होगा कि हिंदी कोई पिछड़ी या ग्रामीण भाषा नहीं, बल्कि आधुनिक, वैज्ञानिक और समृद्ध भाषा है। यदि हिंदी को केवल बोलचाल, अनुष्ठान या मनोरंजन तक सीमित कर दिया गया, तो उसका विकास अवरुद्ध हो जाएगा। इसे व्यवहार और कार्य की भाषा बनाना समय की माँग है।

निजी क्षेत्र और शिक्षा

सरकारी कार्यालयों के साथ-साथ निजी क्षेत्र में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ना चाहिए। व्यवसायिक विज्ञापन, बैंकिंग, बीमा और औद्योगिक क्षेत्रों में हिंदी की सशक्त उपस्थिति लोगों के विश्वास को और मज़बूत करेगी। तकनीकी, विधिक और वैज्ञानिक साहित्य हिंदी में उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। इसके बिना हिंदी शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाएगी।

विद्यालयों और कॉलेजों में बच्चों को हिंदी बोलने से रोकने जैसी प्रवृत्तियाँ चिंताजनक हैं। यह न केवल भाषा के प्रति हीन भावना पैदा करती हैं, बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास को भी कमजोर करती हैं। स्कूलों को चाहिए कि वे बच्चों को मातृभाषा में बोलने और लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे वे सहजता से अन्य भाषाएँ भी सीख पाएँगे।

मंच और हिंदी का गौरव

सरकारी कार्यक्रमों, विद्यालयों और महाविद्यालयों में मंचासीन व्यक्तियों को हिंदी में ही व्याख्यान देने का प्रयास करना चाहिए। जब उच्च पदों पर आसीन लोग हिंदी का प्रयोग करेंगे, तभी यह संदेश जाएगा कि हिंदी वास्तव में गौरव की भाषा है। उदाहरण प्रस्तुत करने से ही समाज में सकारात्मक बदलाव आता है।

निष्कर्ष

हिंदी की यात्रा लंबी है, चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं, लेकिन अवसर अनंत हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इसे केवल राजभाषा के औपचारिक दायरे में सीमित न रखकर व्यवहार और तकनीक की भाषा बनाया जाए। यदि हिंदी अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित होगी, तो देश के भीतर भी यह और मज़बूत होगी। यह भाषा न केवल भारत की आत्मा है, बल्कि भारतीयता की साझा पहचान भी है। जब हम सब मिलकर इसे सम्मान और प्रयोग देंगे, तभी यह सच्चे अर्थों में राष्ट्र की पहचान और विकास की भाषा बनेगी।

कविता

माही ... एक गुड़िया प्यारी

माही है एक गुड़िया न्यारी,
और उसे है नींद प्यारी।
आज उसे स्कूल है जाना,
पर मुश्किल है नींद भगाना।
रोज सहेलियाँ माही को बुलाती,
और माही उनको इंतजार कराती।
माँ जब है इक डंडा लाती,
नींद माही की झट-पट उड़ जाती।

अब नहीं चलेगा नींद का बहाना,
जब माही को स्कूल है जाना।
तोता बुल बुल भालू मोर,
माही के साथ मचाते शोर।
क्योंकि माही है एक गुडिया न्यारी
और उसे है नींद प्यारी।

– सिक्ता शर्मा
पत्नी प्रतीक शर्मा,
वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन)

हिंदी : भारतीय अस्मिता का प्रतीक और एकता का सूत्र

डॉ. एस वी एस नारायण मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। यह हमारी परंपराओं, मूल्यों और विविधताओं को जोड़ने वाली वह कड़ी है, जो भारत की आत्मा को अभिव्यक्त करती है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया और उसी दिन की याद में हिंदी दिवस मनाया जाता है। यह अवसर हमें हिंदी की शक्ति और हमारे जीवन में उसकी अनिवार्यता का स्मरण कराता है।

आज हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में गिनी जाती है। करोड़ों लोग इसे अपनी मातृभाषा या संपर्क भाषा के रूप में बोलते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने इसकी पहुँच को और व्यापक बनाया है। हिंदी ने सिद्ध किया है कि वह आधुनिकता और तकनीक के साथ कदमताल कर सकती है और विज्ञान व प्रौद्योगिकी जैसे जटिल विषयों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है।

विज्ञान और तकनीकी लेखन में हिंदी की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यदि वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी केवल अंग्रेज़ी में सीमित हो, तो समाज का एक बड़ा वर्ग उससे वंचित रह जाता है। हिंदी के माध्यम से विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना संभव है। तकनीकी शब्दावली के हिंदी रूपों का प्रयोग और प्रशिक्षण इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं। इससे राष्ट्र की वैज्ञानिक चेतना सशक्त होगी।

मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) एक तकनीकी संगठन है। यहाँ राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। उच्च तकनीकी कार्यों और 'ग' क्षेत्र में स्थित होने की चुनौतियों के बावजूद मिधानि परिवार ने यह सिद्ध किया है कि यदि आत्मीयता और प्रतिबद्धता हो, तो हिंदी प्रशासनिक और तकनीकी दोनों कार्यों की सक्षम भाषा बन सकती है। हमारे लिए हिंदी केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। हिंदी में कार्य करना प्रक्रियाओं को सरल बनाता है और संगठन में आत्मीयता तथा सहयोग का वातावरण निर्मित करता है।

हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर मिधानि में विविध प्रतियोगिताएँ और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इससे कर्मचारियों में न केवल भाषा के प्रति आत्मीयता बढ़ती है, बल्कि साहित्यिक और रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी प्रोत्साहन मिलता है। कर्मचारियों को हिंदी भाषा और टंकण का प्रशिक्षण दिया जाता है। श्रेष्ठ कार्य के लिए उन्हें प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत सम्मानित किया जाता है। यह दर्शाता है कि हिंदी मिधानि की कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हिंदी हमारी पहचान है और इसे आत्मीयता से अपनाना हमारा दायित्व है। मुझे विश्वास है कि हिंदी आने वाले समय में और अधिक सशक्त, आधुनिक और वैश्विक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होगी। मिधानि परिवार यह संकल्प लेता है कि राजभाषा हिंदी को प्रशासनिक, तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यों में और अधिक गति प्रदान की जाएगी, ताकि यह भाषा केवल परंपरा का नहीं, बल्कि भविष्य की प्रगति का भी आधार बने। भारतेंदु हरिश्चंद्र के शब्दों में कहा जा सकता है कि

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।
अँग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन,
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

गुलामी की मानसिकता दूर करने में भाषा की भूमिका

उमेंद्र सिंह
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
(डब्ल्यूपीएम)

प्रस्तावना

भाषा मानव सभ्यता का वह आधार स्तंभ है, जिस पर संस्कृति, परंपरा, ज्ञान और पहचान का सम्पूर्ण ढाँचा खड़ा होता है। भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की चेतना, उसकी स्मृतियों, उसके संघर्षों और उसके स्वप्नों की वाहक होती है। किसी भी समाज या राष्ट्र की आत्मा उसकी भाषा में ही बसती है। जब हम अपनी भाषा में सोचते, बोलते और लिखते हैं, तब हम केवल शब्दों का प्रयोग नहीं करते, बल्कि अपनी सभ्यता और संस्कारों को जीवित रखते हैं।

गुलामी : केवल राजनीतिक नहीं, मानसिक भी

सामान्यत: गुलामी का अर्थ हम शारीरिक बंधनों या राजनीतिक पराधीनता से जोड़ते हैं, परंतु गुलामी का एक और स्वरूप है, जो कहीं अधिक गहरा और खतरनाक है - मानसिक गुलामी। जब किसी राष्ट्र या समाज की सोच पर बाहरी प्रभाव इस कदर हावी हो जाए कि वह अपनी भाषा, संस्कृति और मूल्यों को हीन समझने लगे, तब वास्तविक गुलामी जन्म लेती है। यह गुलामी दिखाई नहीं देती, परंतु पीढ़ियों तक हमारे आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को खोखला कर देती है।

भारत ने 1947 में राजनीतिक स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली, परंतु दुर्भाग्यवश मानसिक गुलामी की जंजीरें आज भी पूरी तरह नहीं टूटी हैं। हममें से अनेक लोग आज भी यह मानते हैं कि अंग्रेजी या विदेशी भाषा में बोलना ही बुद्धिमत्ता और प्रगति का प्रतीक है, जबकि अपनी मातृभाषा में बोलना पिछड़ेपन का। यही सोच हमें अपनी जड़ों से काट देती है।

भाषा और आत्मसम्मान का संबंध

भाषा और आत्मसम्मान का गहरा संबंध है। जब व्यक्ति अपनी भाषा को सम्मान देता है, तो वह स्वयं को भी सम्मान देता है। इसके विपरीत, जब हम अपनी भाषा को हेय दृष्टि से देखते हैं, तो अनजाने में स्वयं को भी कमतर आंकने लगते हैं। यही कारण है कि मानसिक गुलामी आत्मविश्वास की सबसे बड़ी शत्रु है।

हम अक्सर देखते हैं कि शिक्षित होने के बावजूद अनेक लोग अपनी ही भाषा में सही ढंग से अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाते। इसका कारण यह नहीं है कि वे सक्षम नहीं हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने अपनी भाषा को कभी गंभीरता से अपनाया ही नहीं। भाषा में सोचने की क्षमता ही व्यक्ति को स्पष्ट और मौलिक विचार देती है।

इतिहास के पन्नों से उदाहरण

भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब जन-आंदोलन हुए, तब-तब भाषा ने निर्णायक भूमिका निभाई। महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद जैसे महान नेताओं ने जनता से संवाद करने के लिए भारतीय भाषाओं का ही सहारा लिया।

महात्मा गांधी इंग्लैंड से पढ़-लिखकर लौटे थे और अंग्रेजी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था, फिर भी उन्होंने हिंदी और गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं को ही अपने विचारों का माध्यम बनाया। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में अंग्रेजी में भाषण देकर भारत का गौरव बढ़ाया, किंतु भारत लौटकर उन्होंने भारतीय भाषाओं में ही जनमानस को जागृत किया। यदि वे केवल विदेशी भाषा में संवाद करते, तो क्या करोड़ों भारतीय उनके विचारों से प्रेरित हो पाते ? निश्चय ही नहीं।

विदेशी भाषाएँ : साधन या साध्य ?

यह कहना बिल्कुल भी उचित नहीं होगा कि विदेशी भाषा सीखना

गलत है। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाएँ ज्ञान, विज्ञान और वैश्विक संवाद के लिए उपयोगी साधन हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब साधन को साध्य बना लिया जाता है। जब हम यह मान लेते हैं कि बिना विदेशी भाषा के हम सफल नहीं हो सकते, तब हम अनजाने में अपनी मानसिक स्वतंत्रता खो देते हैं।

हमें यह समझना होगा कि भाषा ज्ञान का माध्यम है, ज्ञान का विकल्प नहीं। यदि ज्ञान अपनी मातृभाषा में प्राप्त हो, तो वह अधिक गहरा, स्थायी और प्रभावी होता है।

विश्व के अन्य देशों से सीख

यदि हम विश्व के विकसित और शक्तिशाली देशों पर दृष्टि डालें, तो पाएँगे कि उन्होंने अपनी मातृभाषा को ही शिक्षा, प्रशासन और अनुसंधान का माध्यम बनाया। जापान, चीन, रूस, फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों ने कभी अपनी भाषाओं को त्यागा नहीं।

जापान द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरी तरह तबाह हो गया था, फिर भी उसने अपनी भाषा में विज्ञान, तकनीक और प्रबंधन की शिक्षा देकर कुछ ही दशकों में स्वयं को विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में स्थापित कर लिया। चीन, जिसने भारत के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की थी और लंबे समय तक गरीबी और भुखमरी से जूझता रहा, आज अपनी भाषा के बल पर वैश्विक शक्ति बन चुका है। इन देशों ने यह सिद्ध कर दिया कि ज्ञान तभी फलता–फूलता है, जब वह अपनी मिट्टी और अपनी भाषा में पनपता है।

भारत में भाषा और शिक्षा

भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ हैं, जो हमारी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। यदि शिक्षा मातृभाषा में दी जाए, तो छात्र विषय को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं, रचनात्मक बनते हैं और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा पर बल देती है, जो एक सकारात्मक कदम है। यह नीति न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाएगी, बल्कि मानसिक गुलामी से मुक्ति की दिशा में भी सहायक सिद्ध होगी।

प्रशासन और कार्यस्थल पर भाषा

प्रशासन और कार्यालयों में भी भारतीय भाषाओं का प्रयोग आत्मनिर्भरता को बढ़ाता है। जब आम नागरिक अपनी भाषा में सरकारी कार्य कर पाता है, तो उसे शासन से जुड़ाव महसूस होता है। इसके विपरीत, विदेशी भाषा का अत्यधिक प्रयोग प्रशासन को आम जनता से दूर कर देता है।

कार्यालयों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग से न केवल कार्य सुगम होता है, बल्कि कर्मचारियों में आत्मसम्मान और सहभागिता की भावना भी बढ़ती है।

मानसिक गुलामी से मुक्ति का मार्ग

मानसिक गुलामी से मुक्ति का मार्ग आत्मस्वीकृति से होकर गुजरता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारी भाषा, संस्कृति और परंपराएँ किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं हैं। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह सिखाना होगा कि वे गर्व के साथ अपनी भाषा का प्रयोग करें।

घर से लेकर विद्यालय, कार्यालय और समाज तक-हर स्तर पर भाषा के प्रति सम्मान की भावना विकसित करनी होगी। जब हम अपनी भाषा में सोचेंगे, तभी मौलिक चिंतन विकसित होगा और तभी सच्ची रचनात्मकता जन्म लेगी।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि स्वतंत्रता का आधार है। राजनीतिक स्वतंत्रता तभी पूर्ण होती है, जब मानसिक स्वतंत्रता भी प्राप्त हो। यदि हमें सचमुच गुलामी की मानसिकता से मुक्त होना है, तो अपनी भाषा को स्वाभिमान और राष्ट्र की शान बनाना होगा।

आइए, हम सब यह संकल्प लें कि अपनी भाषा को हीन नहीं, बल्कि गर्व का विषय बनाएँगे। जब हमारी सोच, हमारी शिक्षा और हमारा प्रशासन अपनी भाषा में होगा, तभी भारत सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और मानसिक रूप से स्वतंत्र राष्ट्र बनेगा।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका

राजकुमार साहू
मास्टर तकनीकी सहायक
(यूटिलिटीज)

प्रस्तावना

मित्रों, हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक एकता और भावनात्मक अभिव्यक्ति की आत्मा है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, हिंदी एक ऐसी सेतु–भाषा के रूप में उभरती है, जो देश के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ती है। हिंदी को जन-जन तक पहुँचाने में साहित्य, पत्रकारिता, शिक्षा और प्रशासन के साथ-साथ जिस माध्यम ने सबसे अधिक प्रभाव डाला है, वह है-हिंदी सिनेमा। हिंदी फिल्मों ने न केवल भाषा को लोकप्रिय बनाया, बल्कि उसे भावनाओं, गीतों, संवादों और कथानकों के माध्यम से आम जनमानस के हृदय में स्थापित किया।

हिंदी सिनेमा : जनसंचार का सशक्त माध्यम

हिंदी सिनेमा भारत का सबसे प्रभावशाली जनसंचार माध्यम रहा है। सिनेमा पढ़े-लिखे और अनपढ़, ग्रामीण और शहरी, अमीर और गरीब-सभी वर्गों तक एक साथ पहुँचता है। जहाँ साहित्य पढ़ने के लिए साक्षरता की आवश्यकता होती है, वहीं सिनेमा दृश्य और श्रव्य माध्यम होने के कारण सीधे जनमानस को प्रभावित करता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्मों के संवाद और गीत लोगों की जुबान पर सहज ही चढ़ जाते हैं और भाषा का प्रचार स्वत: हो जाता है।

देशभक्ति गीतों द्वारा हिंदी का प्रसार

स्वतंत्रता के बाद हिंदी फिल्मों ने देशभक्ति की भावना को प्रबल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'ऐ मेरे वतन के लोगों', 'वतन पे जो मिटा है', 'मेरे देश की धरती', 'कर चले हम फिदा' जैसे गीतों ने हिंदी को भावनात्मक रूप से लोगों से जोड़ा। ये गीत न केवल हिंदी भाषी राज्यों में, बल्कि गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी अत्यंत लोकप्रिय हुए। जब कोई तमिल, तेलुगु या मलयालम भाषी व्यक्ति भी इन गीतों को गुनगुनाता है, तो यह हिंदी की व्यापक स्वीकार्यता का प्रमाण बन जाता है।

गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी फिल्मों का प्रभाव

हिंदी फिल्मों का प्रभाव केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं रहा। दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर राज्यों और आदिवासी क्षेत्रों में भी हिंदी फिल्मों ने भाषा का प्रचार किया। आज तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्यों में हिंदी फिल्मों के संवाद और गीत सामान्य बोलचाल का हिस्सा बन चुके हैं। कई गैर-हिंदी भाषी कलाकारों ने हिंदी सिनेमा के माध्यम से भाषा सीखी और उसे अपनाया। यह हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी सफलता है।

टेलीविजन और धारावाहिकों की भूमिका

हिंदी फिल्मों के साथ–साथ टेलीविजन धारावाहिकों ने भी हिंदी भाषा को घर-घर पहुँचाया। 'रामायण', 'महाभारत', 'ओम नम: शिवाय' जैसे धारावाहिकों ने शुद्ध और संस्कृतनिष्ठ हिंदी को लोकप्रिय बनाया। इन धारावाहिकों के संवाद आज भी लोगों की स्मृति में जीवित हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक और सामाजिक धारावाहिकों ने सरल और बोलचाल की हिंदी को जनमानस से जोड़ा, जिससे गैर-हिंदी भाषी दर्शक भी हिंदी समझने और बोलने लगे।

रियलिटी शो और मंचीय कार्यक्रम

आधुनिक समय में 'कौन बनेगा करोड़पति', 'इंडियन आइडल', 'सारेगामापा', 'सुर संग्राम' जैसे रियलिटी शोज़ ने हिंदी को एक साझा मंच प्रदान किया। 'कौन बनेगा करोड़पति' में अमिताभ बच्चन की शुद्ध, सरल और प्रभावशाली हिंदी ने

देशभर के दर्शकों को आकर्षित किया। इस कार्यक्रम ने भाषा के आधार पर होने वाले भेदभाव को कम किया और हिंदी को संवाद की सहज भाषा बना दिया।

धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में हिंदी

गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, दुर्गा पूजा जैसे उत्सवों में हिंदी फिल्मी भजन और गीत आज भी प्रमुखता से बजते हैं। अनुराधा पौडवाल, लता मंगेशकर, भजन सम्राट अनूप जलोटा जैसे कलाकारों के हिंदी भजनों ने धार्मिक आयोजनों में हिंदी को स्थायी स्थान दिलाया। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी फिल्में केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक एकता की संवाहक भी हैं।

रेडियो और हिंदी फिल्म संगीत

विविध भारती, ऑल इंडिया रेडियो और एफएम चैनलों ने हिंदी फिल्मी गीतों के माध्यम से भाषा का व्यापक प्रचार किया। रेडियो वह माध्यम रहा है, जिसने गाँव-गाँव तक हिंदी गीतों और संवादों को पहुँचाया। आज भी पुराने फिल्मी गीत लोगों को भाषा से भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं और पीढ़ियों के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

डिजिटल युग और सोशल मीडिया

4जी नेटवर्क और इंटरनेट के आगमन के बाद हिंदी भाषा को नया मंच मिला है। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी फिल्मों और वेब सीरीज़ ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को पहुँचाया है। आज विदेशों में रहने वाले भारतीय भी हिंदी फिल्मों के माध्यम से अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े हुए हैं।

ऐतिहासिक उदाहरण : हिंदी फिल्मों की स्वीकार्यता

1957 में बनी फिल्म 'स्वर्ण सुंदरी' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। मूलत: तमिल भाषा में बनी इस फिल्म को हिंदी में डब या अनुवाद करने के बजाय हिंदी में ही पुनर्निर्मित किया गया। यह निर्णय फिल्म की ऐतिहासिक सफलता का कारण बना। इस घटना ने सिद्ध कर दिया कि यदि हिंदी को देश के कोने-कोने तक पहुँचाना है, तो हिंदी फिल्मों का माध्यम अत्यंत प्रभावी है।

सिनेमा : समाज का दर्पण

किसी भी देश का सिनेमा उस समाज का दर्पण होता है। हिंदी फिल्मों ने सामाजिक कुरीतियों, पारिवारिक मूल्यों, राष्ट्रवाद, नारी सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया। 'दो बीघा ज़मीन', 'मदर इंडिया', 'जागते रहो', 'लगान' जैसी फिल्मों ने हिंदी भाषा के साथ सामाजिक चेतना को भी मजबूत किया।

संवाद और डायलॉग : हिंदी की अमर धरोहर

हिंदी फिल्मों के संवाद हिंदी भाषा की लोकप्रियता का सबसे सशक्त प्रमाण हैं। 'मेरे पास माँ है', 'जले को आग कहते हैं...', 'यह हाथ मुझे दे दे ठाकुर' जैसे संवाद आज भी जनमानस की स्मृति में जीवित हैं। इन संवादों ने हिंदी को दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक पहुँचाया और उसे जनभाषा बनाया।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी सिनेमा

आज जब अनेक भाषाएँ अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं, तब हिंदी सिनेमा के माध्यम से हिंदी निरंतर आगे बढ़ रही है। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है और इसका श्रेय काफी हद तक हिंदी फिल्मों को जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी फिल्मों ने हिंदी भाषा को केवल राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई है। हिंदी फिल्में मनोरंजन का साधन मात्र नहीं, बल्कि भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना की वाहक हैं। उन्होंने हमें हँसाया, रुलाया, सोचने पर मजबूर किया और सबसे बढ़कर-हमें अपनी राजभाषा पर गर्व करना सिखाया।

आज आवश्यकता है कि हम हिंदी फिल्मों की इस भूमिका को समझें और अपनी भाषा को सम्मान दें। जब तक हिंदी सिनेमा जीवंत रहेगा, तब तक हिंदी भाषा भी जन-जन की जुबान पर जीवंत बनी रहेगी।

समय प्रबंधन : सफलता की कुंजी

के.उदय चंद्रिका
वरिष्ठ प्रबंधक (एचआरएम-इलेक्ट्रिकल)

आज के तेज़ रफ्तार युग में समय सबसे मूल्यवान संपदा बन चुका है। धन, पद, प्रतिष्ठा और संसाधन खो जाने पर पुन: प्राप्त किए जा सकते हैं, किंतु बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। इसी सत्य को एक प्रसिद्ध कहावत बहुत सटीक ढंग से व्यक्त करती है-

'हाथ से निकला तीर और बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

समय वह शक्ति है जो हर व्यक्ति के जीवन में समान रूप से आती है, परंतु उसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं। किसी के लिए समय सफलता की सीढ़ी बन जाता है, तो किसी के लिए वही समय असफलता का कारण बन जाता है। अत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जीवन की दिशा और दशा, दोनों का निर्धारण समय के सदुपयोग से होता है।

समय : जीवन की अदृश्य पूँजी

समय न तो दिखाई देता है और न ही उसे बाँधा जा सकता है, फिर भी वही हमारे जीवन की सबसे ठोस सच्चाई है। यह हर पल हमारे हाथों से फिसलता रहता है। यदि समय का सही उपयोग किया जाए, तो यह जीवन की कठिनाइयों को कम कर देता है, घावों को भर देता है और हमें लक्ष्य तक पहुँचाता है। इसके विपरीत, समय का दुरुपयोग पछतावे, तनाव और असंतोष को जन्म देता है।

समय न अच्छा होता है, न बुरा-वह तो केवल अवसर होता है। अच्छा या बुरा उसे हमारा दृष्टिकोण और हमारा व्यवहार बनाता है।

समय प्रबंधन क्या है ?

अक्सर लोग समय प्रबंधन को लेकर भ्रमित रहते हैं। वास्तव में, समय प्रबंधन की कोई एक निश्चित परिभाषा नहीं है। विशेषज्ञों के अनुसार, 'Time Management' **शब्द स्वयं में एक मिथ्या नाम** (misnomer) **है,** क्योंकि हम समय को प्रबंधित नहीं कर सकते। हम केवल अपने कार्यों, प्राथमिकताओं और गतिविधियों को समय के अनुसार व्यवस्थित कर सकते हैं।

अर्थात, विभिन्न कार्यों को करने के लिए कितना समय दिया जाए, किस कार्य को पहले और किसे बाद में किया जाए- इसका विवेकपूर्ण निर्णय ही समय प्रबंधन कहलाता है। यह एक कला भी है और एक अनुशासन भी।

समय प्रबंधन की आवश्यकता किसे है ?

यह धारणा कि समय प्रबंधन केवल उच्च पदों पर कार्यरत अधिकारियों या प्रबंधकों के लिए आवश्यक है, पूरी तरह गलत है। समय प्रबंधन जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है-

- विद्यार्थी के लिए, ताकि वह पढ़ाई और व्यक्तित्व विकास में संतुलन बना सके
- कर्मचारी के लिए, ताकि वह कार्यदायित्वों को कुशलतापूर्वक निभा सके
- गृहिणी के लिए, ताकि घर और स्वयं के लिए समय निकाल सके
- संस्था के लिए, ताकि संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग हो सके

संक्षेप में, **जो भी व्यक्ति जीवन में सफलता, संतुलन और संतोष चाहता है, उसके लिए समय प्रबंधन अनिवार्य है।**

प्रभावी समय प्रबंधन के प्रमुख तत्व

समय प्रबंधन केवल घड़ी देखने का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह सोचने और योजना बनाने की प्रक्रिया है। इसके कुछ प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं-

1. सुदृढ़ योजना

हर कार्य की शुरुआत योजना से होती है। बिना योजना के

किया गया कार्य समय और ऊर्जा दोनों की बर्बादी बन जाता है। दिन, सप्ताह और माह के कार्यों की स्पष्ट रूपरेखा बनाना समय प्रबंधन की पहली सीढ़ी है।

2. लक्ष्य एवं उद्देश्यों का निर्धारण

जब तक लक्ष्य स्पष्ट नहीं होगा, तब तक प्रयास भी दिशाहीन रहेगा। छोटे और बड़े लक्ष्यों को तय कर उन्हें क्रमबद्ध रूप से पूरा करना समय के सदुपयोग की पहचान है।

3. समय-सीमा का निर्धारण

हर कार्य के लिए समय-सीमा तय करना अत्यंत आवश्यक है। बिना समय-सीमा के कार्य लटकते रहते हैं और तनाव बढ़ता जाता है।

4. उत्पादकता बढ़ाने वाले उपकरण

आज के डिजिटल युग में कई ऐसे उपकरण उपलब्ध हैं जो समय प्रबंधन को सरल बनाते हैं, जैसे-RescueTime, Clockify, Todoist, Asana, Evernote, Eisenhower Matrix, Time Blocking Deewj Pomodoro Technique l

इनका सही उपयोग कार्यक्षमता को कई गुना बढ़ा सकता है।

आधुनिक उदाहरण : एलन मस्क की कार्यशैली

विश्व प्रसिद्ध उद्यमी एलन मस्क अपनी असाधारण कार्य नैतिकता के लिए जाने जाते हैं। वे Time Blocking Technique का प्रयोग करते हैं, जिसमें पूरे दिन को छोटे-छोटे समय खंडों में बाँट दिया जाता है और प्रत्येक खंड एक विशेष कार्य के लिए निर्धारित होता है। यही कारण है कि वे एक साथ Tesla, SpaceX और अन्य परियोजनाओं का कुशलतापूर्वक संचालन कर पाते हैं।

विश्राम भी है आवश्यक

लंबे समय तक बिना रुके काम करना शरीर और मन दोनों को थका देता है। इसलिए कार्यों के बीच विश्राम अत्यंत आवश्यक है।

पोमोडोरो तकनीक-25 मिनट का केंद्रित कार्य और 5 मिनट का ब्रेक-एक सिद्ध और प्रभावी तरीका है, जो एकाग्रता और ऊर्जा बनाए रखता है।

समय प्रबंधन के लाभ

समय प्रबंधन के लाभ केवल व्यावसायिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी हैं-

- उत्पादकता में वृद्धि
- कार्यों की समय से पूर्व पूर्णता
- तनाव में कमी और मानसिक संतुलन
- आत्मविश्वास और मनोबल में वृद्धि
- व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य
- रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहन

अच्छा समय प्रबंधन व्यक्ति को अपने शौक, परिवार और आत्म-विकास के लिए भी पर्याप्त समय देता है, जिससे जीवन अधिक संतुलित और सुखद बनता है।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व और समय प्रबंधन

समय प्रबंधन का महत्व अनेक महान व्यक्तित्वों के जीवन से स्पष्ट होता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अपनी अनुशासित दिनचर्या और समयनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध हैं। वे प्रत्येक कार्य को निर्धारित समय पर पूरा करने में विश्वास रखते हैं, यही कारण है कि वे वैश्विक मंच पर एक प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित हैं।

फिल्म जगत में **अमिताभ बच्चन** की दीर्घकालिक सफलता का रहस्य भी उनकी समयनिष्ठा और अनुशासन में निहित है।

बेंजामिन फ्रैंकलिन, महान अमेरिकी वैज्ञानिक और विचारक, अपने सटीक समय प्रबंधन के लिए जाने जाते थे। वहीं **जे. के. रोलिंग** ने अपने छात्र जीवन में छोटे-छोटे समय खंडों का उपयोग कर लेखन किया, जिसका परिणाम आज विश्वप्रसिद्ध 'हैरी पॉटर' श्रृंखला के रूप में हमारे सामने है।

निष्कर्ष

व्यक्तिगत विकास से ही सामाजिक और राष्ट्रीय विकास संभव है। व्यक्तिगत विकास का एक छोटा किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है - **समय प्रबंधन**।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग करना सीख ले, तो उसका प्रभाव केवल उसके जीवन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि परिवार, समाज और देश की प्रगति में भी परिलक्षित होगा।

आइए, हम सब यह संकल्प लें कि हम समय को नष्ट नहीं करेंगे, बल्कि उसे सफलता का माध्यम बनाएँगे। जब समय हमारा साथी बन जाएगा, तब सफलता स्वयं हमारे कदम चूमेगी।

सिनेमा की रोशनी में हिंदी : भाषा, संस्कृति और जनचेतना का विस्तार

गरिमा ओझा
सहायक प्रबंधक (वित्त)

प्रस्तावना

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।'

यह दोहा केवल भाषा की महत्ता नहीं बताता, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किसी भी समाज और राष्ट्र की वास्तविक प्रगति उसकी अपनी भाषा से जुड़ी होती है। हिन्दी भाषा भारत की आत्मा है-यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, भावनाओं और सामूहिक स्मृति की संवाहिका है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी वह सेतु है, जो विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों और संस्कृतियों को आपस में जोड़ती है। इस सेतु को सुदृढ़ करने में जिस माध्यम ने सबसे व्यापक, प्रभावशाली और भावनात्मक भूमिका निभाई है, वह है - **हिन्दी सिनेमा**।

भाषा और सिनेमा : एक स्वाभाविक संबंध

मानव ने जब से अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करना शुरू किया, तब से भाषा का विकास हुआ। भाषा ने समाज को संगठित किया, विचारों को दिशा दी और संस्कृति को स्थायित्व प्रदान किया। ठीक उसी प्रकार सिनेमा, आधुनिक युग की सबसे प्रभावशाली कला विधा के रूप में उभरा। जब भाषा और सिनेमा का मिलन हुआ, तब अभिव्यक्ति को नई ऊँचाई मिली।

हिन्दी सिनेमा ने भाषा को केवल शब्दों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे दृश्य, संगीत, संवाद और भावनाओं के माध्यम से जीवंत बना दिया। साहित्य जहाँ पाठक से कल्पना की अपेक्षा करता है, वहीं सिनेमा कल्पना को साकार रूप में प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि हिन्दी सिनेमा भाषा के प्रचार–प्रसार का सबसे सशक्त माध्यम बन गया।

हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकास और सिनेमा

हिन्दी भाषा के विकास को सामान्यत: तीन कालखंडों में विभाजित किया जाता है - प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल। आधुनिक काल में हिन्दी का स्वरूप अत्यंत तीव्र गति से बदला और विस्तृत हुआ। इस परिवर्तन में हिन्दी सिनेमा की भूमिका निर्णायक रही।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जब भारतीय सिनेमा ने आकार लेना शुरू किया, तब रंगमंच और लोकनाट्य परंपराएँ उसकी प्रेरणा बनीं। मूक फिल्मों के युग (1913-1930) में भी कथानक, भाव-भंगिमा और सांस्कृतिक संकेतों के माध्यम से भारतीयता झलकती थी। किंतु 1931 में जब पहली बोलती फिल्म '**आलम आरा**' प्रदर्शित हुई, तो हिन्दी भाषा ने सिनेमा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। यह कोई संयोग नहीं था कि इस पहली बोलती फिल्म की भाषा हिन्दी रखी गई-यह एक सुविचारित निर्णय था, ताकि अधिकतम दर्शक उससे जुड़ सकें।

हिन्दी सिनेमा : जनभाषा का विस्तार

हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी को केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं रखा। दक्षिण भारत, पूर्वोत्तर भारत और आदिवासी क्षेत्रों तक हिन्दी भाषा की पहुँच सिनेमा के माध्यम से बनी। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ गैर-हिन्दी भाषी दर्शकों ने हिन्दी फिल्मों को देखकर भाषा सीखी, समझी और अपनाई।

आज यह सामान्य दृश्य है कि केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश या असम के लोग हिन्दी फिल्मी संवादों और गीतों को सहजता से बोलते और गुनगुनाते हैं। यह हिन्दी सिनेमा की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि उसने भाषा को औपचारिक न रखकर जनभाषा बना दिया।

गीत-संगीत : हिन्दी का भावनात्मक विस्तार

यदि यह कहा जाए कि हिन्दी सिनेमा का सबसे प्रभावशाली

पक्ष उसका संगीत है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिन्दी फिल्मी गीतों ने भाषा को भावनात्मक गहराई दी। लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, मुकेश जैसे गायकों की आवाज़ में हिन्दी शब्द केवल सुने नहीं गए, बल्कि महसूस किए गए।

देशभक्ति गीतों-जैसे *'ऐ मेरे वतन के लोगों', 'मेरे देश की धरती', 'कर चले हम फिदा'* - ने हिन्दी को राष्ट्रभावना से जोड़ा। प्रेम, विरह, सामाजिक पीड़ा और आशा के गीतों ने हिन्दी को जनमानस की भाषा बना दिया।

धार्मिक और पौराणिक कथाएँ : सांस्कृतिक सेतु

हिन्दी सिनेमा और टेलीविजन धारावाहिकों ने धार्मिक और पौराणिक कथाओं के माध्यम से हिन्दी के शुद्ध और संस्कृतनिष्ठ स्वरूप को लोकप्रिय बनाया। *रामायण, महाभारत, जय संतोषी माँ, ओम नमः शिवाय* जैसे धारावाहिकों और फिल्मों ने पीढ़ियों को हिन्दी भाषा से जोड़ा।

इन कार्यक्रमों के संवाद आज भी लोगों की स्मृति में जीवित हैं और यह प्रमाणित करते हैं कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक शिक्षा का भी माध्यम है।

हिन्दी सिनेमा और सामाजिक चेतना

हिन्दी सिनेमा समाज का दर्पण रहा है। इसने सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक विषमताओं, स्त्री की स्थिति, किसान और श्रमिक की समस्याओं को हिन्दी भाषा में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। *दो बीघा ज़मीन, मदर इंडिया, सुजाता, अंकुर, लगान* जैसी फिल्मों ने हिन्दी भाषा के माध्यम से सामाजिक विमर्श को जन-जन तक पहुँचाया।

वैश्विक मंच पर हिन्दी सिनेमा

1952 में आयोजित पहले अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में हिन्दी सिनेमा को वैश्विक पहचान मिली। इसके बाद हिन्दी फिल्में अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सराही जाने लगीं। आज हिन्दी फिल्में न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बड़े पैमाने पर देखी जाती हैं। प्रवासी भारतीयों के लिए हिन्दी सिनेमा अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है।

आज यह तथ्य गर्व का विषय है कि विश्व में बनने वाली हर चौथी फिल्म भारतीय होती है, जिनमें हिन्दी फिल्मों की संख्या सर्वाधिक है।

संवाद : हिन्दी की अमिट छाप

हिन्दी सिनेमा के संवाद हिन्दी भाषा की लोकप्रियता का स्थायी प्रमाण हैं। *'मेरे पास माँ है', 'जले को आग कहते हैं', 'यह हाथ मुझे दे दे ठाकुर'* जैसे संवाद आज भी जनमानस की स्मृति में अंकित हैं। ये संवाद केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भाषा की सांस्कृतिक शक्ति को दर्शाते हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

यद्यपि हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी को व्यापक बनाया है, फिर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने की चुनौती बनी हुई है। हिन्दी आज भी संवैधानिक रूप से राजभाषा है। आवश्यकता है कि हिन्दी सिनेमा के निर्माता, लेखक और गीतकार भाषा की शुद्धता और गरिमा बनाए रखें। अनावश्यक विदेशी शब्दों के अंधाधुंध प्रयोग से बचना होगा।

भविष्य की दिशा

डिजिटल प्लेटफॉर्म, ओटीटी और सोशल मीडिया ने हिन्दी सिनेमा को नई उड़ान दी है। वेब सीरीज़ और डिजिटल फिल्मों के माध्यम से हिन्दी भाषा युवा पीढ़ी से नए रूप में जुड़ रही है। यदि इस माध्यम का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो हिन्दी का भविष्य और अधिक उज्ज्वल हो सकता है।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी सिनेमा और हिन्दी भाषा एक-दूसरे के पूरक हैं। हिन्दी सिनेमा ने भाषा को जनमानस की धड़कन बनाया है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, चेतना और राष्ट्रीय एकता का वाहक है।

जब तक हिन्दी सिनेमा अपनी जड़ों से जुड़ा रहेगा, तब तक हिन्दी भाषा भी जीवंत और प्रासंगिक बनी रहेगी। यही हिन्दी सिनेमा की सबसे बड़ी उपलब्धि और हिन्दी भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है।

'हिन्दी है देवों की वाणी, परम प्रताप सुखद कहानी।
हिन्दी है उतनी पावन, जितना माँ गंगा का पानी।।'

मुझे नौकरी की जरूरत है

रमा मल्लिका
कार्यालय अधीक्षक (भंडार)

सूत्रधार: नमस्कार दोस्तों! आप सभी को मेरा प्यार भरा नमस्कार! आज हम लोग क्रय विभाग के कर्मचारी आप सभी के सामने एक नाटक प्रस्तुत करना चाहते है। जिसका नाम है 'मुझे नौकरी की जरूरत है।' यह नाटक वर्तमान में नौकरी चाहने वालों को डर दिखाने का एक विनोदी प्रयास है।

पहला दृश्य- एक आदमी जो बहुराष्ट्रीय कंपनी में यानी मल्टी नेशनल कंपनी में शामिल होने के लिए बेताब है, जिसका नाम Planet of the grapes है, जी हाँ! यह एक कंपनी का नाम है, अंग्रेजी फिल्म का नहीं। जिसकी शाखाएं है एक से अधिक एक छोटे से कमरे में।

सीन - 1

लड़का interview के लिए आया है। (Boss interviewer है)

लड़का: (Walks into the room) Good Morning madam!

बॉस: Morning! आपका बायोडेटा ! ? (Interviewer hands over his bio-data to boss).

बॉस: मेरा लक्ष्य एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करना है 'जहाँ एक अच्छी कॉफी मशीन हो' क्या कॉफी मशीन ?

लड़का: जी हाँ मैडम, मेरी माँ ने मुझे बताया 'हमेशा एक मजाक के साथ दिन की शुरुआत करें।' आशा है कि आपको मेरा मजाक पसंद आया हो!

बॉस: आप बाहर जा सकते हैं। आपको नौकरी से निकाला गया है!

लड़का: लेकिन मैडम! मैं इस कंपनी में काम तक नहीं करता हूँ।

बॉस: हाँ मुझे पता है। मेरी माँ ने मुझे बताया कि हमेशा किसी को फायर करके दिन की शुरुआत करो।

लड़का: मैडम! कम से कम आज आप किसी को हायर करके अपने दिन की शुरुआत कर सकते है! नहीं!

बॉस: हायर... फायर... हायर... फायर... wow!! अच्छा rhyming है! चलो एक छोटा गेम खेलते हैं! मैं अलार्म सेट करके हायर... फायर... हायर... फायर... कहती रहूँगी, अलार्म बंद होने पर मैं कौन से शब्द पर पर रुक जाती हूँ देखते हैं। अगर अलार्म बंद होने पर मैं हायर कहती हूँ तो मैं आपको हायर कर लूँगी, अगर अलार्म बंद होने पर फायर आता है तो आपको फायर किया जाएगा। क्या सौदा ठीक है ?

लड़का: ठीक है मैडम, चलिए गेम शुरू करते हैं।

बॉस: हायर... फायर... हायर... फायर... फायर... फायर... फायर... फायर... फायर...

लड़का: मैडम! यह चीटिंग है।

बॉस: नहीं, नहीं खिड़की के पर्दे में आग लग गई है।

(लड़का डर जाता है और कहता है)

लड़का: पुलिस को बुलाओ... वो... वो... फायर इंजन को बुलाओ (अपना मोबाइल बॉस को देते हुए)

(लड़का अपना फोन बॉस को देता है, बॉस एक नंबर डायल करती है, और बात करना शुरू करती है।)

बॉस: हेलो! क्या यह फायर इंजन... औ... औ... मेरा मतलब यह फायर का नंबर है ? मैं Planet of the Grapes कंपनी की बॉस हूँ, जी मेरी कंपनी में फायर लग गई है।

फायर मेन: घबराओ मत मैडम! पहले आप मेरे कुछ सवालों के जवाब दीजिए।

बॉस: देखिए मैं इस कंपनी की मालकिन हूँ, सिर्फ सवाल पूछती हूँ! मैं सवालों के जबाव नहीं देती हूँ समझे!

फायर मेन: देखिए मैडम अगर सवालों के जवाब नहीं देंगी तो मैं आपकी मदद नहीं कर सकता।

बॉस: हम्म... चलो चलो! ठीक है... पूछो क्या पूछना है।

फायर मेन: क्या आपके पास बीमा है?

बॉस: हाँ हाँ क्यों नहीं? मेरे पास जीवन आनंद, जीवन सरल, जीवन अक्षय...

फायर मेन: (फायरमैन बीच में रोकता है और कहता है) अरे मैडम आपके पर्सनल इंश्योरेंस के बारे में नहीं, आपके कार्यालय के लिए इंश्योरेंस है क्या?

बॉस: तो फिर ऐसे पूछो ना, दरअसल तुम्हारा सवाल ही गलत है। मेरा जवाब ठीक ही था।

लड़का: मैडम, आप प्लीज जो जरूरत है वो ही उसे बताइए ना, ऑफिस में आग लग गई है और आप उसके साथ लड़ रही हैं। क्या आप सही है।

बॉस: (फायर इंजन वाले भैया आप 2 मिनट होल्ड कीजिए प्लीज) लड़के की ओर देखते हुए बॉस ने कहा, आप कंपनी में ज्वाइन भी नहीं हुए हैं और आप मुझे सुझाव दे रहे है कि क्या करना है और क्या नहीं!

लड़का: मैडम आप मुझे बाद में डांट लेना प्लीज आप उस फायर इंजन वाले को जल्दी आने के लिए और हमें बचाने के लिए कहिए।

फायर मेन: क्या आप मुझे जवाब देंगे या मैं कॉल डिसकनेक्ट करूं

बॉस: हाँ... हाँ हमने अपनी कंपना के लिए बीमा कराया है।

फायर मेन: ठीक है! क्या आपके ऑफिस में हर कोई सांस ले रहा है?

बॉस: हाँ! लग तो ऐसे ही रहा है। एक सेकेंड रुको मैं अभी चेक करके बताती हूँ।

लड़के की नाक जोर से पकड़ के चेक करती है और वो चिल्लाता है।

बॉस: हाँ... ठीक है, अभी सांस चल रही है।

Fireman: ठीक है अगर ऐसा है तो यह इमरजेंसी मामला नहीं है। फायर इंजन आपके ऑफिस तीन दिन में पहुँच जाएगा।

बॉस: ओह! रुको रुको, मुझे एक बार फिर से चेक करने दो। (बॉस एक बार फिर लड़के की नाक पकड़ती है और वो 'मुझे बचाओ... मुझे बचाओ कहके चिल्लाता है...'

बॉस: क्या अब ये इमरजेंसी है?

Fireman: हाँ, नियम संख्या 616 (छ: एक छ:) के अनुसार जब कोई बचाओ...बचाओ... चिल्लाता हो तो यह इमरजेंसी की स्थिति है... मैडम जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी हम आपके ऑफिस पहुँच जाएंगे!

बॉस: फिर लड़के से बात करना शुरु कर देती है। कहती है अब जब हमारे पास फायर इंजन पहुँचने तक कुछ समय है, तो हम इंटरव्यू जारी रखेंगे।

लड़का: मैडम ऑफिस में आग लग चुकी है, और मुझे लगता है कि हमें यहाँ से निकलना चाहिए।

बॉस: Oh! That's too bad... ऑफिस, में आज तुम्हारा पहला दिन है और तुम इतनी जल्दी निकल जाना चाहते हो।

लड़का: ठीक है मैडम! पूछिए आपको जो पूछना है

बॉस: यह एक साधारण गणित से जुड़ा हुआ प्रश्न है। आज सुबह हमारी ऑफिस बस बालापूर से 25 कर्मचारियों के साथ शुरू हुई। पहले स्टाप में तीन लोग बस में चढ़े, फिर अगले स्टाप में दो लोग चढ़े और फिर अगले स्टाप में कोई नहीं चढ़ा। उसके अगले स्टाप में तीन लोग चढ़े। फिर अगले स्टाप पर दो लोग उतर गए और फिर अगले स्टाप में...

लड़का (get irritated): मैडम क्या हम हायर... फायर ... हायर ... फायर ... गेम खेलें प्लीज...

बॉस: अरे सुनो ना अगले स्टाप में एक व्यक्ति अंदर आ जाता है। और अगले तीन स्टाप में कोई भी अंदर बाहर नहीं जाता है? आखिरी स्टाप में तीन लोग बस के अंदर आ जाते है... ठीक है न... समझ गए ना... अब मेरा सवाल यह है कि बस ने कितने स्टाप लिए?

लड़का: मुझे नहीं पता... होंगे कुछ दस-बीस... लेकिन मुझे एक बात पता है! आपके ऑफिस के लिए एक नॉन

स्टाप, point to point बस की जरूरत है। और मुझे उम्मीद है कि फायर इंजन बिना कहीं स्टाप लिए जल्दी आ जाए।

बॉस: अब अगला सवाल! यह मानते हुए कि बस सुरक्षित रूप से ऑफिस पहुँच गई तो इस समय ऑफिस में कितने लोग मौजूद हैं?

लड़का: कोई नहीं।

बॉस: कैसे?

लड़का: क्योंकि सभी लोग इस समय यहाँ आग लगने के कारण सुरक्षित जगह पर पहुँच गए होंगे।

बॉस: Wow!! I am impressed and you are HIRED, मैं आपसे यही कहूँगी के आप अपने जीवन के बाकी समय हमारे ऑफिस में ही काम करें।

लड़का: मेरा बाकी जीवन? जिस तरीके से आग फैली है, इस ऑफिस में इसे देख के मुझे नहीं लगता कि 20 मिनट से ज्यादा जीवित रह पाऊंगा।

बॉस: अब जब आप हायर किए गए हो तो मुझे एक चीज याद आ रही है! और वो है हमारे ऑफिस की कॉफी मशीन... चलो कॉफी पीते हैं।

सूत्रधार: दोस्तों अब चलिए बढ़ते हैं सीन संख्या - 2 की ओर... जहाँ मालिक और नया कर्मचारी दो अन्य सहयोगियों से मिलते हैं...

सीन - 2

कॉफी मशीन के पास बॉस, लड़का और दो सहकर्मियों के बीच का वार्तालाप

बॉस और लड़का कॉफी मशीन के पास जा कर दो और कर्मचारियों से बातचीत करते हैं।

कर्मचारी-1: हेलो बॉस, क्या हमारे ऑफिस में दिवाली सेलिब्रेशन शुरू हो गया है? मैं देख रही हूँ कि ऑफिस पूरा आग से जलाया गया है!

लड़का: ओ... मेमसाब वो आग है! ऑफिस में आग लग गई है और इमरजेंसी सिचुएशन है।

कर्मचारी-1: इमरजेंसी? यह इमरजेंसी सिचुएशन?? अरे अरे घबराओ नहीं यार, यह आग तो बरसात का मौसम शुरू होने पर खुद ब खुद बुझ जाएगी।

लड़का: क्या?? बारिस का मौसम? पर यह आग तो ऑफिस बिल्डिंग को बर्बाद कर के रख देगी, तब क्या होगा?

कर्मचारी-1: चिंता मत करो, हमारे ऑफिस को हमारे कर्मचारियों से ज्यादा कोई नहीं बर्बाद कर सकता।

लड़का: (तंग हो कर) मैडम जी मुझे यह बता दीजिए कि इस ऑफिस में फायर एक्ज़िट कहाँ है?

कर्मचारी-1: क्यों दोस्त? क्या तुम हमारे ऑफिस का चक्कर लगाना चाहते हो? यार वो सब बाद में फुरसत से देख लेना। अभी आराम से कॉफी तो पीलो।

लड़का: (हैरान होकर) क्या??

बॉस: by the way Miss Agni Mitra and Agnideep, मिलिए हमारे नए कर्मचारी Mr. Agnivesh से

कर्मचारी-1: Hello Mr. Agnivesh

लड़का: Hello Agni Mitra

कर्मचारी-2: Hello Agnivesh

लड़का: Hello Agnideep

कर्मचारी-2: वैसे क्या आपने कल भारत और इंग्लैंड के बीच क्रिकेट मैच देखा था? कोहली ने तो धूम मचा के रख दी है और भुवनेश्वर विकेट के बाद विकेट ले रहा है। India is on fire man (with full excitement and enthusiasm)

Guy: आ... आ... correction India के साथ-साथ यह ऑफिस भी फायर पर है।

लड़का: फायर अलार्म एक्टिवेट कर के क्या हमारे कर्मचारी को एलर्ट नहीं करना चाहिए?

कर्मचारी-2: ना.... ना.... ऐसे करने से हमारे कर्मचारी नींद से उठ जाएंगे ना...

लड़का: क्या? वो ऑफिस में सोते हैं?

कर्मचारी-2: हाँ (very casually), लेकिन हमेशा नहीं। वो

तभी सोते है जब उनके पास कुछ काम हो।

सूत्रधार: जब इन लोगों के बीच यह बातचीत चल रही है, एक नए व्यक्ति का ऑफिस में प्रवेश होता है। देखते है कि कौन है वो नया व्यक्ति।

सीन - 3

एक नया व्यक्ति ऑफिस के अंदर प्रवेश करता है।

बॉस: (With full of anger) आप इतनी देर से ऑफिस में आने की जुर्रत कैसे कर सकते हैं? अभी समय 12:00pm है।

फायरमेन: लेकिन मैम... मैं तो फायरमैन हूँ।

बॉस: मुझे कोई फरक नहीं पड़ता के तुम फायरमैन हो, सुपरमैन हो या फिर स्पाइडरमैन... मुझे इस ऑफिस में डिसिप्लिन चाहिए... समझे!

फायरमेन: मैम आप समझ रहे हैं ना! मैं फायरमैन हूँ... फायरमैन... आपके ऑफिस में आग लगी है ना, मैं उसे बुझाने आया हूँ।

बॉस: अच्छा??? ठीक है... ठीक है...! एक कप कॉफी पीयोगे???

फायरमेन: एक कप कॉफी? क्षमा करें

नहीं... नहीं, मेरा मतलब है, क्या आप एक कप कॉफी पीना चाहते है क्या?

सूत्रधार: Planet of Grapes के सभी महानुभावों की कॉफी मशीन के पास अभी भी वार्तालाप जारी है... इसी दौरान फायरमैन ने कुछ ही मिनटों में पूरी तरह आग बुझा दी। अब फिर से हमारी पसंदीदा कॉफी मशीन के पास वापस चलते हैं! और देखते हैं वहां क्या चल रहा है।

लड़का: बहुत-बहुत धन्यवाद फायरमैन भैया... मैं बहुत चिंतित था और आपने हमारी जिंदगी बचाई।

कर्मचारी-1: अब जब हम लाइफ सेविंग की बात कर रहे है. तो यह बात हमें एक चीज की याद दिलाती है, मुझे अपने डेस्कटॉप पर एक्सेल शीट को सेव करना है। See you guys during next fire breakout... bye...

कर्मचारी-2: See you during next fire breakout (leave the place).
Boss: See you guys during next fire breakout (leave the place) Interviewee अभी भी कॉफी मशीन के पास ही खड़ा है।

लड़के (लड़का:): (shocked) क्या??? एक और फायर ब्रेक आउट?? (और वो सोच में पड़ गया।)

सूत्रधार: श्री अग्निवेश दरअसल नौकरी करने से डरते हैं लेकिन MNC में काम करना उनका सपना है, तो अब तक जो हुआ उन्हें सपने में ही दिखाई दे रहा था... देखते है इस कहानी का अंत कैसे होता है।

सीन – 4

(Interviewee sits in the chair and sleeps & all of the sudden hoarse a voice)

चपरासी: Sir... Oh Sir...

लड़का: Wakes up from deep sleep & almost falls off the chair.
चपरासी: अगला नंबर आपका ही है interview का... (interview वाला बंदा रूम में Enter होता है)

लड़का: May I come in...

बॉस: Yes, sit down... After a pause. आपका रिज़्यूम दिखाइए

लड़का: फिर से वही चेहरा देख के हैरान हो के 'नहीं' चिल्ला कर उस जगह से भाग जाता है।

सूत्रधार: यह है हमारे छोटे से प्रयास Skit की The End... और श्रीमान अग्निवेश जी ने अपने रिज़्यूम में अच्छी कॉफी मशीन नहीं बल्कि एक अच्छे फायर एक्ज़िट वाले HN Company में नौकरी करने की इच्छा रखते हैं।

आप सभी लोगों का एक बार फिर से तहे दिल से शुक्रिया... और सस्नियकाल... नमस्कार....

रिजेक्ट नहीं होना है

रोहित निगुड़कर
अपर महा प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

मुझे देश के प्रतिष्ठित रक्षा उपक्रम में, यानी कि एक सरकारी नौकरी, नई-नई मिली थी। मन खुशी से सातवें आसमान पर था। अब तो अपनी भी शादी होगी-यह सोचकर ही मन में अजीब-सी गुदगुदी हो रही थी। उन्हीं दिनों एक शादी में जाने का मौका मिला।

अमूमन जब बेरोज़गार शादियों में जाते हैं, तो सजी-धजी लड़कियों को निहारते हैं, अच्छा-खासा खाना खाते हैं और चुपचाप घर लौट आते हैं। मगर मजाल है कि कोई सुंदरी उनकी ओर घास डाले। लेकिन जैसे ही नौकरी लग जाती है, तस्वीर ही बदल जाती है - न सिर्फ लड़कियाँ, बल्कि उनके माता-पिता भी रुचि दिखाने लगते हैं।

मैं भी इसी मुगालते में था कि अब तो अपन ही 'सेंटर ऑफ अट्रैक्शन' रहेंगे। मगर अफ़सोस, उसी शादी में मेरी मौसी का लड़का भी शरीक हुआ था, जो एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर था। उस दिन एक कड़वी सच्चाई समझ में आई कि सार्वजनिक उपक्रमों में काम करने वाले कुंवारों का 'मार्केट' थोड़ा डाउन ही रहता है।

खैर, कुछ दिनों बाद पापा ने बड़े सहज भाव से पूछा - 'तुम्हारा पैकेज कितना है? जॉब प्रोफाइल कैसी है? शादी के लिए लड़की देखें क्या?'

मैंने भी बड़ी संजीदा आवाज़ में कहा, 'हाँ पापा, देखना शुरू कर दीजिए, पर अपन दहेज नहीं लेंगे।'

पापा हँसते हुए बोले, 'तुम्हारे लिए कोई दहेज देगा भी नहीं। उल्टा हमसे न माँगा, तो गनीमत समझना।'

लेकिन 2006-07 में आए ग्लोबल रिसेशन के कारण हम जैसे लोगों की कद्र अचानक बढ़ गई और मेरे लिए भी एक रिश्ता आ गया।

लड़की के साथ पाँच-छह रिश्तेदार मुझे देखने घर आ गए। पापा-मम्मी ने पहले ही हिदायत दे दी थी - 'उनके सामने फुदकते हुए मत आ जाना, जब बुलाएँ तभी आना।'

आख़िरकार बुलावा आया। मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ बैठक में पहुँचा, लेकिन इतने सारे लोगों को देखकर हाथ-पाँव ढीले पड़ गए। ऐसा लग रहा था मानो गब्बर के आदमियों के सामने बसंती को बुलाया जा रहा हो।

लड़की को देखा तो मन ही मन एक ही आवाज़ आई - *कुछ भी करो, पर रिजेक्ट नहीं होना है।*

मेरे बैठते ही एक रिश्तेदार ने पूछा, 'आपका टेक-होम कितना है?'

'टेक-होम' मेरे लिए नया शब्द था, लेकिन इतना तो समझ गया कि वे तनख़्वाह के बारे में पूछ रहे हैं। मैंने मासूमियत से जवाब दिया, 'घर ले जाने नहीं मिलती, सीधे बैंक में क्रेडिट होती है।'

सब लोग हँसने लगे। पापा ने मुझे घूरकर देखा। तभी उनमें से एक बोले, 'आपका सेंस ऑफ ह्यूमर अच्छा है।'

फिर सवाल आया, 'पैकेज कितना है?'

मैं वैसे ही नर्वस था। उस समय मेरी मासिक आय बीस हज़ार रुपये थी। मेरे मुँह से निकला, 'बीस...'

बीच में ही वे बोल पड़े, 'ट्वेंटी लाख! वाह, यह तो बहुत अच्छा पैकेज है।'

मुझे तुरंत समझ में आ गया कि बात बिगड़ चुकी है। फिर भी मन ने कहा - *कुछ भी करो, पर रिजेक्ट नहीं होना है। इसलिए मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा।*

इसके बाद मुझे और लड़की को बातचीत के लिए छत पर भेज दिया गया।

करीब पंद्रह-बीस मिनट तक मैं उसे अपने काम के बारे में बताता रहा। बातचीत हिंदी में ही हो रही थी। अचानक उसने पूछा, 'आप मराठी नहीं बोलते ?'

मुझे फिर लगा कि मामला हाथ से निकल रहा है। मन ने फिर चेताया - *कुछ भी करो, पर रिजेक्ट नहीं होना है।*

जैसे टीवी चैनल बदलते ही भाषा बदल जाती है, वैसे ही मैंने तुरंत मराठी में बोलना शुरू कर दिया।

इतने में दीदी नाश्ता लेकर आ गईं। शिष्टाचारवश हम दोनों खड़े हो गए। नाश्ता रखकर दीदी चली गईं। वह बैठने ही वाली थी कि उसे इंप्रेस करने के चक्कर में मैंने उसकी कुर्सी पीछे खींच दी। नतीजा यह हुआ कि वह थोड़ा-सा लड़खड़ा गई। मुझे लगा, अब तो बात पूरी तरह बिगड़ गई।

कुछ देर बाद उसने पूछा, 'आपकी नौकरी में विदेश जाने का मौका मिलता है क्या ?'

मैंने जवाब दिया, 'नहीं, फाइनेंस वालों को ऐसा मौका कम ही मिलता है। हाँ, जो लोग विदेश जाकर आते हैं, उनके बिल मैं ही क्लियर करता हूँ।'

उसकी फीकी - सी हँसी देखकर समझ गया कि यह जोक उसे खास पसंद नहीं आया।

फिर उसने पूछा, 'आपको कौन-से खेल पसंद हैं ?'

मैंने तपाक से कहा, 'सुपर मारियो, कॉन्ट्रा, जंगल।'

वह ज़ोर से हँसने लगी। मुझे समझ ही नहीं आया कि वह मुझ पर हँस रही है या मुझसे खुश है।

थोड़ी देर बाद सभी जाने लगे। पापा बोले, 'तुम दोनों जाकर ऑटो ले आओ।'

मैं बाइक निकाल लाया। पार्किंग से बाइक निकालकर उसकी ओर बढ़ा ही था कि अचानक कहीं से एक कुत्ते का बच्चा सामने आ गया। बाइक स्किड हुई और मैं धड़ाम से गिर पड़ा।

मन ही मन सोचा - आज सारी स्टाइल का फलूदा यहीं होना था।

और तभी दिल से आवाज़ आई - *अब तो कुछ भी कर ले, तू तो रिजेक्ट ही है।*

पदभार ग्रहण - निदेशक (वित्त)

संपादक मंडल की ओर से निदेशक (वित्त) का पद ग्रहण करने पर **श्रीमती मधुबाला कल्लूरी** को हार्दिक शुभकामनाएँ!

हमें यह बताते हुए प्रसन्नता है कि **श्रीमती मधुबाला कल्लूरी** को 21 जुलाई 2025 से मिधानि में निदेशक (वित्त) के पद पर नियुक्त किया गया है। वित्त, लेखांकन, लागत निर्धारण, बजट प्रबंधन, कराधान एवं लेखा-परीक्षण के क्षेत्र में उनके **32 से अधिक वर्षों के व्यापक अनुभव** से मिधानि को सशक्त नेतृत्व प्राप्त होगा। उनका मार्गदर्शन संगठन की वित्तीय संरचना को और अधिक मजबूत करेगा तथा उत्कृष्टता एवं नवाचार के मिधानि के मिशन को गति प्रदान करेगा।

एमएसएमई सम्मेलन का आयोजन

16 मई 2025 को मिधानि द्वारा एमएसएमई सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य रक्षा एवं सामरिक क्षेत्रों में स्वदेशीकरण को प्रोत्साहित करना था। इसमें विभिन्न लघु एवं मध्यम उद्योगों के प्रतिनिधियों तथा मिधानि अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग, आपूर्ति-श्रृंखला सुदृढ़ीकरण तथा आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों पर विचार-विमर्श हुआ। सीएमडी डॉ. एस.वी.एस. नारायण मूर्ति ने एमएसएमई कॉन्क्लेव 2025 का उद्घाटन किया जबकि श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) (तत्कालीन) और श्रीमती के. मधुबाला, महाप्रबंधक (वित्त) (तत्कालीन) ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

ग्राहक सम्मेलन

मिधानि द्वारा 'सामरिक सामग्रियों के स्वदेशीकरण' विषय पर आयोजित कस्टमर कॉन्क्लेव (ग्राहक सम्मेलन) 2025 भारत के आत्मनिर्भरता मिशन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने सामरिक सामग्रियों के क्षेत्र में स्वदेशी अनुसंधान, विकास एवं उत्पादन को सशक्त बनाने की दिशा में मिधानि की भूमिका और प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के महानिदेशक (मिसाइल एवं रणनीतिक प्रणाली) श्री यू. राजा बाबू ने सामरिक सामग्रियों के क्षेत्र में घरेलू नवाचार की बढ़ती आवश्यकता पर बल देते हुए स्वदेशी समाधान विकसित करने का आह्वान किया।

सम्मेलन में रक्षा, अंतरिक्ष एवं ऊर्जा क्षेत्रों से जुड़े प्रमुख हितधारकों की सक्रिय सहभागिता रही, जहाँ आयात पर निर्भरता कम करने तथा सामग्री विकास एवं प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों में स्वदेशी क्षमताओं को सुदृढ़ करने पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर मिधानि के तत्कालीन निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री टी. मुत्तुकुमार ने संगठन की उत्पादन क्षमताओं, विपणन दृष्टिकोण तथा रणनीतिक भागीदारियों के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों में मिधानि के योगदान को रेखांकित किया।

इस अवसर पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के निदेशक प्रोफेसर बी. एस. मूर्ति के नेतृत्व में आयोजित विशेषज्ञ पैनल में भारत डायनामिक्स लिमिटेड, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, रक्षा धातुकर्म अनुसंधान प्रयोगशाला, राष्ट्रीय फोर्ज एवं विकास प्रौद्योगिकी केंद्र तथा ब्रह्मोस एयरोस्पेस के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पैनल चर्चा में तकनीकी सहयोग, आपूर्ति शृंखला के स्थानीयकरण तथा सामग्री नवाचार की रणनीतियों पर गहन मंथन हुआ।

यह उच्च-प्रभावी सम्मेलन राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में एक विश्वसनीय सामग्री भागीदार के रूप में मिधानि की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है तथा सामरिक एवं महत्वपूर्ण सामग्रियों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत को सशक्त बनाने की उसकी निरंतर प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025 के अवसर पर मिधानि ने 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' विषय के अंतर्गत कर्मचारियों के समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। 14 जून 2025 को मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक **डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति** ने इन कार्यक्रमों का ऑनलाइन उद्घाटन करते हुए शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला।

17 जून 2025 को महिला कर्मचारियों तथा बीपीडीएवी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के लिए 'महिला सशक्तिकरण के लिए योग' विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसका नेतृत्व योग चिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता **श्रीमती अनंता लक्ष्मी** ने किया। 21 जून 2025 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मिधानि परिसर में उत्साहपूर्वक मनाया गया, जहाँ कर्मचारियों ने माननीय प्रधानमंत्री **श्री नरेंद्र मोदी** के संबोधन का सीधा प्रसारण देखा तथा सामूहिक योग अभ्यास में भाग लिया।

इन आयोजनों ने योग के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली और सकारात्मक कार्य संस्कृति को प्रोत्साहित करने की दिशा में मिधानि की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

कृषि मंत्रालय द्वारा सम्मान

मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति को नई दिल्ली में आयोजित गवर्नमेंट अचीवमेंट्स एंड राइजिंग पीएसई एक्सपो-2025 के दौरान माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी द्वारा एयरोस्पेस एवं रक्षा क्षेत्रों के लिए विशेष सामग्रियों तथा उन्नत विनिर्माण में उत्कृष्ट नवाचार के लिए सम्मानित किया गया।

एचएएल द्वारा मिधानि का सम्मान

भारत की एयरोस्पेस क्षमताओं को मज़बूत बनाना!

एच ए एल, एफ एण्ड एफ, बेंगलुरु द्वारा मिधानि को क्ष्एयरोस्पेस अनुप्रयोग के लिए सामरिक सामग्री विकसित करने में अपनी उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया। मिधानि को डीजी-एरोनॉटिकल सिस्टम्स और महानिदेशक-एडीए, महानिदेशक-डीजीएक्यूए द्वारा सम्मानित किया गया।

इसी क्रम से एच ए एल, लखनऊ द्वारा मिधानि को एयरोस्पेस के कच्चे माल के स्वदेशीकरण में असाधारण योगदान के लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पहचान स्ट्रेटेजिक मटीरियल में आत्मनिर्भरता के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता को और मज़बूत करती है।

#आत्मनिर्भरभारत

टाइम्स सीएसआर पुरस्कार

गर्व का क्षण! एमपीएचसीसी ट्रस्ट को हार्दिक बधाई।

31 जुलाई 2025 को मिधानि को उसके प्रभावशाली सामाजिक दायित्व कार्यों के लिए टाइम्स सीएसआर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में मिधानि के सतत योगदान की पहचान है। मिधानि प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र (एमपीएचसीसी) को सीएसआर टाइम्स द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम एवं स्वास्थ्य सेवा श्रेणी में स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार श्रीमती के. मधुबाला, महाप्रबंधक (वित्त) तथा डॉ. पी. वीराराजू, उप महाप्रबंधक (चिकित्सा) द्वारा प्राप्त किया गया।

मिधानि एवं एनएफटीडीसी के बीच समझौता ज्ञापन

मिधानि ने अनुसंधान एवं विकास को सुदृढ़ करने तथा आवश्यक धातु प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से नॉन–फेरस मटीरियल्स टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट सेंटर (एनएफटीडीसी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन का आदान–प्रदान मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति तथा एनएफटीडीसी के निदेशक डॉ. के. बालासुब्रमण्यम के बीच, माननीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी तथा खान मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री विवेक कुमार बाजपेयी की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

मिधानि ने हैदराबाद स्थित अपने कॉर्पोरेट परिसर में अत्यंत देशभक्ति और उत्साह के साथ 79वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस अवसर पर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति, वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी तथा उनके परिवारजन उपस्थित रहे।

समारोह का शुभारंभ डॉ. मूर्ति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुआ, जिसके उपरांत राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया गया तथा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की टुकड़ी द्वारा प्रभावशाली गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया। सीआईएसएफ कर्मियों एवं मिधानि की टीम द्वारा की गई मार्च पास्ट ने संगठन के अनुशासन, एकजुटता और समर्पण को सजीव रूप में प्रदर्शित किया।

इस अवसर पर बीपीडीएवी विद्यालय के विद्यार्थियों एवं मिधानि के कर्मचारियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। इसके पश्चात मेधावी विद्यार्थियों, उत्कृष्ट कर्मचारियों तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही, 25 वर्षों की सेवापूर्ण अवधि पूर्ण करने वाले कर्मचारियों को सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।

'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम

मिधानि में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम एक प्रेरणादायक पहल रही, जिसमें संगठन के सभी स्तरों-वरिष्ठ नेतृत्व, अधिकारी, कर्मचारी और कर्मी-ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस श्रमदान (क्लीनलिनेस ड्राइव) में परिसर के भीतरी और बाहरी क्षेत्रों में व्यापक स्वच्छता कार्य किए गए, जिससे न केवल कार्यस्थल का वातावरण साफ-सुथरा बना बल्कि स्वच्छता के प्रति कर्मचारियों में सामाजिक जिम्मेदारी और जागरूकता भी बढ़ी। कार्यक्रम के दौरान स्वच्छ भारत की भावना को सशक्त करते हुए, सभी ने स्वच्छता की प्रतिज्ञा ली और इसे दैनिक जीवन का अंग बनाने का संकल्प लिया, जो राष्ट्रव्यापी स्वच्छता ही सेवा अभियान के उद्देश्य से पूरी तरह मेल खाता है। इस पहल से यह संदेश स्पष्ट होता है कि मिधानि न केवल उन्नत विनिर्माण में अग्रणी है, बल्कि सामाजिक और पर्यावरण-संबंधी दायित्वों को भी गंभीरता से निभाती है।

मिधानि में स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण के साथ-साथ सफाई, वृक्षा रोपण, अनियमित मजदूरों के लिए चिकित्सा शिविर तथा रंगोली जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

‘स्वच्छता ही सेवा’ की झलकियाँ

क्वालिटी सर्कल श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मान

मिधानि की विभिन्न टीमों को क्वालिटी सर्कल श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाना गर्व का विषय है। हैदराबाद में आयोजित क्वालिटी सर्कल कन्वेंशन - 2025 में मिधानि की पाँच टीमों ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की, जिनमें से तीन टीमों को स्वर्ण पुरस्कार तथा दो टीमों को रजत पुरस्कार प्राप्त हुआ।

यह उपलब्धि कर्मचारियों के समर्पण, गुणवत्ता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता, सशक्त टीमवर्क तथा नवाचार - प्रधान दृष्टिकोण का सशक्त प्रमाण है। ये पुरस्कार निरंतर सुधार, कार्य - दक्षता और उत्कृष्टता की दिशा में मिधानि की सुदृढ़ गुणवत्ता संस्कृति को रेखांकित करते हैं तथा यह दर्शाते हैं कि मिधानि में गुणवत्ता को केवल लक्ष्य नहीं, बल्कि एक मिशन के रूप में अपनाया जाता है।

मिधानि की 51वीं वार्षिक आम बैठक

वर्ष 2025 में मिधानि की 51वीं वार्षिक आम बैठक आयोजित की गई। बैठक में संगठन के वित्तीय प्रदर्शन, भावी योजनाओं तथा विकास रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की गई।

MIDHANI

आओ, हिंदी से तेलुगु और तेलुगु से हिंदी सीखें

कुछ	కుఛ్	हमें	హమేఁ	किसका	కిస్కా
కొంత	कोंता	మమల్ని	मम्मल्नि	ఎవరిది	एवरिदि
कोई	కోయి	उसे	ఉసే	किससे	కిస్‌సే
ఏదైనా	एदैना	అతనిని	आतनिनि* (आमेनि)**	ఎవరితో	एवरितो
सब	సబ్	मुझे	మూఝే	कौन सा	కౌన్ సా
అందరు	अंदरु	నన్ను, నాకు	नन्नु, नाकु	ఏది	एदि
ज्यादा	జ్యాదా	उन्हें	ఉన్హేఁ	सब कुछ	సబ్‌కుఛ్
ఎక్కువ	एक्कुवा	వారికి	वारिकि	ప్రతిదీ	प्रतिदी
बहुत	బహుత్	उसको	ఉస్కో	अनेक	అనేక్
చాలా	चाला	ఆమెకి	आतनिकि* (आमेकि)**	చాలా	चाला

हिंदी (तेलुगु लिपि) – तेलुगु (देवनागरी लिपि) क्रिया – క్రియా

मैं कल खाऊंगा। ⟷	మైఁ కల్ ఖాఊంగా. ⟷	నేను రేపు తింటాను ⟷	नेनु रेपु तिंटानु।
मैं कल खाऊंगी। ⟷	మైఁ కల్ ఖాఊంగీ. ⟷	నేను రేపు తింటాను ⟷	नेनु रेपु तिंटानु।
हम कल खाएंगे। ⟷	హమ్ కల్ ఖాయేంగే. ⟷	మేము రేపు తింటాం ⟷	मेमु रेपु तिंटाम।
तुम कल खाओगे। ⟷	తుమ్ కల్ ఖాఓగే. ⟷	నీవు రేపు తింటావు ⟷	नीवु रेपु तिंटावु।
तुम कल खाओगी। ⟷	తుమ్ కల్ ఖాఓగీ. ⟷	నీవు రేపు తింటావు ⟷	नीवु रेपु तिंटावु।
आप कल खाएंगे। ⟷	ఆప్ కల్ ఖాయేంగే. ⟷	మీరు రేపు తింటారు ⟷	मीरु रेपु तिंटारू।
वह कल खाएगा। ⟷	వహ్ కల్ ఖాయేగా. ⟷	అతడు రేపు తింటాడు ⟷	अतडु रेपु तिंटाडु।
वह कल खाएगी। ⟷	వహ్ కల్ ఖాయేగీ. ⟷	ఆమె రేపు తింటుంది ⟷	आमे रेपु तिंटुंदी।
वे कल खाएंगे। ⟷	వే కల్ ఖాయేంగే. ⟷	వారు రేపు తింటారు ⟷	वारु रेपु तिंटारू।
यह कल खाएगा। ⟷	యహ్ కల్ ఖాయేగా. ⟷	ఇతను రేపు తింటాడు ⟷	इतनु रेपु तिंटाडु।
यह कल खाएगी। ⟷	యహ్ కల్ ఖాయేగీ. ⟷	ఈమె రేపు తింటుంది ⟷	ईमे रेपु तिंटुंदी।
ये कल खाएंगे। ⟷	యే కల్ ఖాయేంగే. ⟷	వీరు రేపు తింటారు ⟷	वीरु रेपु तिंटारू।
राजु कल खाएगा। ⟷	రాజు కల్ ఖాయేగా. ⟷	రాజు రేపు తింటాడు ⟷	राजु रेपु तिंटाडु।
रानी कल खाएगी। ⟷	రాణి కల్ ఖాయేగీ. ⟷	రాణి రేపు తింటుంది ⟷	रानी रेपु तिंटुंदी।

* पुरुष ** स्त्री

सुविचार

रत्ना कुमारी
अवर कार्यपालक ग्रेड-1
हिंदी अनुभाग

1. यदि आप आकाश का तारा नहीं बन सकते हैं, तो कम से कम अपने घर का दीपक तो बने।
2. कार्यकुशल व्यक्ति के लिए धन और यश की कभी कमी नहीं होती।
3. विवेकशील व्यक्ति अपनी गलतियों से सीखते हैं। लेकिन जो दूसरों की गलतियों से सीखते हैं वे अधिक विवेकशील होते हैं।
4. मुस्कान चेहरे पर तेज, मस्तिष्क को शीतलता और मन को आहलाद देती है।
5. बीते हुए कल और आने वाले कल की चिंता न करें। हमारा वर्तमान ही हमारा भविष्य बनाता है।
6. मैत्री एक मधुर उत्तरदायित्व है, अवसर नहीं।
7. कुछ पल चिंतन-मनन करें इससे अच्छे परिणाम मिलेंगे।
8. कर्म सोच से नहीं उत्तरदायित्व स्वीकार करने की तत्परता से उत्पन्न होते हैं।
9. आचरण रहित ज्ञान का कोई मूल्य नहीं है।
10. मनुष्य जैसा अपने मन में विचारता है, वह वैसा ही बन जाता है।
11. प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है।
12. जो व्यक्ति अपने अंत :करण की स्वच्छता बनाए रखता है उसे किसी का भय नहीं होता।
13. कोई भी महान उपलब्धि उत्साह के बिना कभी हासिल नहीं होती।
14. बिना परिश्रम कोई संसार में पूज्य नहीं होता।
15. चित्त के प्रसन्न रहने से सब दु :ख नष्ट हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है उसकी बुद्धि तुरंत स्थिर हो जाती है।

सचिव, रक्षा उत्पादन के दौरे की झलकियाँ:

रक्षा उत्पादन विभाग के सचिव का मिधानि दौरा

माननीय **श्री संजीव कुमार**, भारतीय प्रशासनिक सेवा, सचिव, रक्षा उत्पादन, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने हैदराबाद में मिधानि के **द्वितीय टाइटेनियम निर्माण संयंत्र** का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक **डॉ. एस. वी. एस. नारायण मूर्ति** तथा भारत डायनामिक्स लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक **कमोडोर ए. माधव राव (सेवानिवृत्त)** भी उपस्थित रहे। साथ में है मिधानि के तत्कालीन निदेशक (वित्त) श्री एन गौरी शंकर राव तथा निदेशक (उ. एवं वी.) श्री टी. मत्तुकुमार।

यह संयंत्र एयरो-ग्रेड टाइटेनियम मिश्र धातु के निर्माण हेतु भारत की सबसे बड़ी एवं अत्याधुनिक सुविधा है, जो देश की रक्षा और अंतरिक्ष आवश्यकताओं के लिए स्वदेशी सामग्री उत्पादन को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

मिधानि की सी एम सी के साथ सचिव महोदय

द्वितीय टाइटिनियम मिधानि संयंत्र की रिबन काटते हुए

श्रीराम मंदिर अयोध्या के लिए दी गई टाइटिनियम की खिड़कियों का अवलोकन करते हुए।

हर घर तिरंगा 2025

मिधानि में राष्ट्रीय पर्व - हर घर तिरंगा अभियान

14 एवं 15 अगस्त 2025 को मिधानि परिसर में हर घर तिरंगा अभियान उत्साहपूर्वक मनाया गया।

कर्मचारियों एवं परिवारजनों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया।